संजय की कलम से ..

नवरात्रि का त्योहार और अर्थबोध

चिरातीत से भारत के लोग आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रि का त्योहार भक्ति-भावना और उत्साह से मनाते चले आते हैं। इस त्योहार के प्रारंभ में ही लोग 'कलश' की स्थापना करते हैं और अखण्ड दीप जगाते हैं जो लगातार नव दिन और रात जगता रहता है। वे इन दिनों कन्या-पूजन करते, नियम पालन करते, जागरण तथा उपवास करते तथा दुर्गा, काली, सरस्वती आदि का पूजन करते हैं।

प्रश्न उठता है कि 'आदि शक्ति' का क्या स्वरूप है; सरस्वती, दुर्गा आदि का क्या वास्तविक परिचय है और अतीत काल में कन्याओं ने क्या महान कार्य किया था जिसकी स्मृति में आज तक नवरात्रि में उनका पूजन होता है?

नवरात्रि से सम्बन्धित प्रसंग

इस विषय में जानकारी के लिये नवरात्रि से सम्बन्धित तीन मुख्य प्रसंग, जिनको कथा रूप में भक्तजन सविस्तार सुना करते हैं, सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उनमें से एक आख्यान में तो यह कहा गया है कि पिछली चतुर्युगी के अन्तिम चरण में जब विश्व-विनाश निकट था, तब मधु और कैटभ नामक असुरों ने देवी-देवताओं को अपना बन्दी बनाया हुआ था और तब श्री नारायण भी मोह निद्रा में सोये हुए थे। तब ब्रह्मा जी के द्वारा आदि कन्या प्रगट हुई। उसने नारायण को जगाया और उन्होंने मधु तथा कैटभ का नाश कर देवी-देवताओं को मुक्त कराया। दूसरे आख्यान में कहा गया है कि 'महिषासुर' नामक असुर ने स्वर्ग के सभी देवी-देवताओं को पराजित किया हुआ था। त्रिदेव की शक्ति से एक कन्या के रूप में जो 'आदि शक्ति' प्रगट हुई, वह दिव्य अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थी, त्रिनेत्री थी और अष्ट भुजाओं वाली थी। उसने महिषासुर का वध किया और देवी-देवताओं को मुक्त कराया। तीसरे प्रसंग में कहा गया है कि सूर्य के वंश में शुम्भ और निशुम्भ नामक दो असुर पैदा हुए। उनके प्रधान कार्यकर्त्ता का नाम रक्तबिन्दु था, सेनापति का नाम धूम्रलोचन था और उसके दो मुख्य सहायकों का नाम चण्ड और मुण्ड था। शिव जी की शक्ति से 'आदि कुमारी' प्रगट हुई और उसके विकराल रूप से काली प्रगट हुई। उसने चण्ड-मुण्ड का विनाश किया और फिर कालिका ने अपनी योगिनी शक्ति द्वारा धूम्रलोचन और रक्तबिन्दु का भी विनाश किया। आख्यान में बताया गया है कि रक्त बिन्दु की यह विशेषता थी कि यदि उसके रक्त का एक भी बिन्दु गिर जाता तो उस बीज से एक और असुर पैदा हो जाता था।

(शेष ..पृष्ठ 32 पर)

अमृत-सूची

- छद्म बंधुआ मज़दूरी *(सम्पादकीय)*..... 2
- ब्रह्मा बाबा से मैंने क्या सीखा...4
- पुरुषोत्तम संगमयुग में.....5
- परमात्म शक्ति और वरदानों की अनुभूति..... 7
- 'पत्र' संपादक के नाम.....10
- धर्मनीति और राजनीति का एक स्वर..... 11
- ज्ञानामृत *(कविता)*..... 12
- जीवन को प्रयोगशाला बनायें..13
- क्षमा वीरस्य भूषणम्..... 16
- अंदर झांक *(कविता)*.....17
- युवाओं का आह्वान..... 18
- मैं अपने भाग्य पर..... 21
- प्रेम-रस भीगे रहो *(कविता)*..22
- सुखमय परिवार.....23
- मेरे शांत रहने से क्या होगा?.25
- सचित्र सेवा समाचार.....26
- अविनाशी नशा 28
- सचित्र सेवा समाचार..... 30

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	75 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	75/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

सम्पादकीय ..✍

छद्म बंधुआ मज़दूरी

एक समय था जब भारत में भी तथा अन्य देशों में भी बंधुआ मज़दूरी प्रचलित थी। गरीब आदमी परिस्थितिवश कर्ज़ तो ले ही लेते थे लेकिन जिस बनिये, साहूकार या ठाकुर से कर्ज़ लेते थे, न चुका सकने की स्थिति में उसके यहाँ बंधुआ मज़दूरी की मजबूरी को झेलते थे। एक तो मज़दूरी कम जिससे घर का खर्च ही नहीं निकलता था, ऊपर से कर्ज़ पर चढ़े हुए ब्याज के कारण आय में से कटौती जिस कारण वे भरपेट खाना भी नहीं खा पाते थे और यह कर्ज़ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता था। पिता के बाद पुत्र को भी उसी मजबूरी की चक्की में पिसना पड़ता था। बंधुआ मज़दूर अर्थात् साहूकार अथवा बनिये से बंधा हुआ, जो ना उसे छोड़कर जा सकता था, ना दूसरी जगह नौकरी ढूँढ़ सकता था और ना ही नौकरी छोड़ घर पर बैठ सकता था। कई बार बंधुआ मज़दूरी के नाम पर मज़दूर के सारे परिवार का ही शोषण होता था। उनकी बहु-बेटियों की भी बड़ी दुर्गति होती थी।

मेहनत अधिक, प्राप्ति कम

वर्तमान समय सरकारों ने कानून बनाकर बंधुआ मज़दूरी को समाप्त कर दिया है। कोई ज़बर्दस्ती किसी को बंधुआ मज़दूर बनाये तो कोर्ट में अपील की जा सकती है। यह बहुत अच्छी बात है। आजकल तो मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए मज़दूर यूनियन आदि भी बनी हुई हैं परन्तु एक छद्म रूप की बंधुआ मज़दूरी आज भी इस संसार के कोने-कोने में प्रचलित है। गरीब-अमीर सभी इस बंधुआ मज़दूरी में बंधे हुए तड़प रहे हैं। यह मज़दूरी कराने वाला कोई बनिया, कोई साहूकार, कोई ठाकुर या कोई राजा-महाराजा नहीं है, यह बंधुआ मज़दूरी कराने वाली है माया। माया अर्थात् पाँच विकार। आज सारी दुनिया पर इसी माया का राज्य है। इन पाँच विकारों में बँधा हुआ व्यक्ति दिन-भर में 12 और 14 घण्टे या इससे भी अधिक समय तक व्यापार, दुकान, खेती या अन्य धंधों में व्यस्त रहता है। वृद्धावस्था तक, शरीर के जर्जर होने तक, धंधे में खटता रहता है लेकिन अंत में उसके हाथ में आता क्या है! भले ही उसने धन कमाया होता है लेकिन जितने घण्टे और जितनी मेहनत लगाई जाती है, प्राप्ति तो उसकी भेंट में बहुत कम होती है। लगता तो ऐसा ही है जैसे माया महारानी गुप्त रूप में आमदनी का बहुत सारा हिस्सा चट कर जाती है और आदमी कमाई (कम आई) के नाम पर सदा ही असंतुष्ट रहता है। अधिकतर बुजुर्ग जीवन-भर खटने के बाद भी जीवन की अंतिम घड़ियों में यही महसूस करते हैं कि अब उनके पास कुछ नहीं है। ज़िन्दगी भर जो कुछ किया, उसका कुछ भी फल नहीं मिला। वह एक तरह से बेगार थी। ना कोई मान मिला, न क्रेडिट, न कोई सेवादार मिला और न ही मन का संतोष।

शान्ति को छोड़
शेष सब मिलता है

इस संबंध में एक दृष्टांत है – किसी गाँव में एक गरीब आदमी गरीबी से परेशान था। एक धनवान आदमी ने दया करके उसे पचास एकड़ जमीन दे दी। वह बहुत खुश हुआ लेकिन यह सोचकर चिन्तित हुआ कि जुताई कैसे करूँ? उदार पुरुष ने उसे हल-बैल भी मुफ्त में दे दिये। निर्धन के पास बीज भी नहीं थे, उदार व्यक्ति ने उसे बीज भी दे दिये। खाद-पानी की ज़रूरत पड़ी तो उदार व्यक्ति ने खाद-पानी भी दे दिये। निर्धन की खुशी का ठिकाना न रहा। उदार पुरुष ने निर्धन के कान में कहा, देख भाई, मैंने भूमि, बैल, हल, बीज, पानी, खाद सब तेरे को दिया और यह सब तेरा ही रहा करेगा बस भूमि में जो फसल हुआ करेगी, वह मेरी हुआ करेगी। अब तो निर्धन ने माथा पीट लिया। इसी बात को मनुष्य अपने जीवन में लागू करके देखें। माया की इस नगरी में मनुष्य शांति के लिए

भटक रहा है। अब माया चुपके से आकर उसे कहती है, मकान ले लो, कोठी ले लो, सोफा सेट ले लो, कार ले लो, स्त्री-पुत्र, धन-संपत्ति ले लो। व्यक्ति सोचने लगता है कि यह माया और माया की नगरी तो बहुत अच्छी है लेकिन फिर माया धीरे से कान में आकर कहती है कि ये सब चीज़ें तेरी हैं और तेरी ही रहेंगी बस शांति तुझे नहीं मिलेगी। चीज़ों को प्राप्त करके यदि शांति ही नहीं मिली तो ये चीज़ें आत्मा के लिए बंधन ही तो हुईं और इन चीज़ों को प्राप्त करने की कवायद बंधुआ मजदूरी ही तो हुई।

माया की इस नगरी में यह बंधुआ मज़दूरी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती है। बाप को देखकर बेटा भी अधिकतर उसी राह पर चलता है और पिता से भी अधिक कड़ी परिस्थितियों में से गुज़रते हुए अंतकाल में वह भी अपने को खाली और खोखला महसूस करता है। उसके बाद उसके बच्चे भी माया की बंधुआ मज़दूरी करने के लिए तत्पर हो जाते हैं।

उपरोक्त बात से हमारा भावार्थ यह नहीं है कि व्यक्ति कमाये नहीं। कमाये लेकिन स्वास्थ्य की बलि चढ़ाकर क्यों कमाये? मन की खुशी को गिरवी रखकर क्यों कमाये? पारिवारिक संबंधों की मिठास को दरकिनार करके क्यों कमाए? मन की शांति और सुकून को गंवाकर क्यों कमाए? पैसा यदि धन है तो क्या स्वास्थ्य, चरित्र, शांति, खुशी, प्यार और मीठे संबंध धन नहीं हैं? और अगर पैसे को ऊपर रखकर इन संपत्तियों को हमने उपेक्षित कर दिया है तो जीवन बंधुआ मज़दूर की तरह ही तो है।

ईश्वर की याद करती है आबाद

अब इस जन्म-जन्म की बंधुआ मज़दूरी से छुड़ाने के लिए सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित हो चुके हैं। वे मनुष्य को जीवन जीने की ऐसी कला सिखा रहे हैं जिसमें वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन सभी माया के बंधनों से मुक्त होकर सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, पवित्रता से भरा जीवन जी सके। भगवान कहते हैं, **'मीठे बच्चे, तुम आदिकाल में देवता थे। कंचन जैसी तुम्हारी काया थी, प्रकृति तुम्हारी दासी थी और तुम इंद्रियजीत और विकारजीत थे। उस दुनिया में अखुट धन-संपत्ति थी और बिना मेहनत के आवश्यकता से अधिक सब कुछ प्राप्त था। वह ईश्वरीय राज्य था, माया का राज्य नहीं। अब मैं माया की बंधुआ मज़दूरी से छुड़ाकर उस ईश्वरीय राज्य में पुन: ले चलने का आपसे वायदा करता हूँ। प्यारे बच्चो, इसके लिए कर्मयोगी बनो, घर-परिवार में रहते हुए, कर्म करते हुए मुझ अपने पिता को प्यार से याद करो, याद में रहते कर्म करोगे तो आबाद हो जाओगे। याद को भूलकर कर्म करोगे तो माया के बंधनों में बंधकर बर्बाद हो जाओगे।'**

खुशी और शान्ति जीवन के साथ-साथ

जब हम परमात्मा की याद में कर्म करते हैं तो वह कर्मयोग कहलाता है। कर्मयोगी व्यक्ति का मन प्रभु की याद में सदा मगन रहता है। कर्म करते समय वह निमित्त भाव धारण किये रहता है इसलिए कर्त्तापन का भान उसे सताता नहीं। वह निमित्त और हलका अपने को महसूस करता है। शरीर के द्वारा कर्म करते हुए भी ईश्वरीय याद से उसकी पारलौकिक कमाई जमा होती रहती है। इसलिए **वह यह नहीं सोचता कि शांति के दिन बाद में आयेंगे लेकिन वह यह सोचता है कि खुशी और शांति जीवन के हर पल में उसके साथ-साथ हैं।** वृद्धावस्था में जब शरीर जर्जर हो जाता है तो भी लंबे जीवनकाल में उसने जो ईश्वरीय कमाई की होती है उसका बल उसमें भरा रहता है। इसलिए वह जीवन को बंधन न मानते हुए मुक्ति के अहसास के साथ जीवन व्यतीत करता है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों से भरपूर अनेक मनभावन राखियाँ ज्ञानामृत कार्यालय में प्राप्त हुई हैं। स्नेही प्रेषक बहनों को हार्दिक आभार और दिल की दुआएँ – सम्पादक

गतांक से आगे..

ब्रह्मा बाबा से मैंने क्या सीखा?

• दादी जानकी

बाबा ने सिखाया, शरीर में रहो पर डिटैच रहो। बाबा से सदा यही सीखे हैं, मन के संकल्पों के तुम गुलाम नहीं रहो। चाहो तो संकल्प रचो, चाहो तो शान्त हो जाओ। कर्मेन्द्रियाँ जो आकर्षित होती हैं, उनको नियंत्रण में रखो। ऐसे नहीं, पता नहीं क्या हुआ, मन चला गया, बुरा कर्म हो गया, नहीं। बाबा कहते हैं, मालिक होकर समझ से अच्छा करो, बुरा छोड़ो। तो बाबा ने बुरा छोड़ने और अच्छा करने की बड़ी अच्छी ट्रेनिंग दी है। आँखों, कानों, मुख, हाथों द्वारा जो हम विकर्म करते रहे हैं, उन पर जीत पाना बाबा ने सिखाया है। बाबा के द्वारा ऐसी सहज ट्रेनिंग मिली है, अपने को आत्मा समझ, हरेक को परमात्मा की संतान समझा तो दृष्टि, वृत्ति, भावना बदल गई। धर्म, जाति, रंग, भाषा आदि के भेद और स्वार्थ समाप्त हो गए। स्थूल दृष्टि से देखने की भावना बदल गई। इसी सृष्टि में रहते आध्यात्मिक जीवन बनाकर, दूसरों का बनाओ, यह बाबा ने सिखाया।

कइयों का प्रश्न उठता है, आध्यात्मिकता जीवन में कैसे आये? संसार भौतिकता से भरा पड़ा है, उससे हमारा नाता कैसे टूटे? परन्तु जब आध्यात्मिकता की पहचान मिलती है, वह रस बैठता है तो भौतिकता कुछ नहीं लगती, उसकी तरफ बुद्धि नहीं जाती। सादा, सूक्ष्म, दिव्य, रूहानी और रायल बनने की सेवा कितना ऊँचा उठा रही है। सादा बनना कितना अच्छा लगता है। जिस घड़ी बाबा को देखा, दिल ने फाइनल फैसला कर लिया कि मुझे तो ऐसा ही जीवन बनाना है।

मैं लौकिक बाप के साथ सैर करने जा रही थी। सामने बाबा आ रहे थे। बाबा को देखा तो एकदम टच हुआ कि यह (लौकिक पिता) तो शरीर का पिता है पर यह (बाबा) मेरा असली पिता है। बाबा बहुत अन्तर्मुखी रहते थे, मेरा मन मानता था कि जो खुद में खोया रहता है, ज़रूर उसने अंदर से बहुत कुछ पाया है तो मन करता था, मुझे बाबा के नज़दीक जाना है, उनसे कुछ सुनना है। जैसे ही बाबा से सुनना शुरू किया तो लगा, ये सब गीता में पढ़ा है पर तब समझ में नहीं आया था, अब समझ में आ रहा है। फिर लगा कि बुद्धि भी दिव्य बन रही है और तीसरा नेत्र भी खुल रहा है। फिर कर्मों में जो कमी थी, वह छूट गई। हम इतने बुरे थे नहीं जो बुराइयाँ छोड़ने की बहुत मेहनत करनी पड़े। इतने अच्छे भी नहीं थे जितना अच्छा होना चाहिए। इंसान इतना अच्छा बने जो

भगवान का प्यार लूटे और संसार के लोगों की सेवा के लिए सैम्पल बने। मुझे लगने लगा कि मंत्र, माला, गुरु के ध्यान की ज़रूरत नहीं है। बाबा को देख-देख शरीर से न्यारा होना सरल हो गया। किसी भी स्थूल चीज़ या मूर्ति के सहारे की ज़रूरत नहीं है। सिर्फ देह से न्यारा होकर, मालिक होकर रहना है।

शुरू में बाबा ने दो शब्द पढ़ाए – मैं कौन, मेरा कौन? इन दो शब्दों को समझकर सब कुछ समझ में आने लगा। मेरा क्या? कुछ नहीं। मेरा तो एक अविनाशी पिता है। तो मेरा-मेरा का महाजाल छूट गया। मेरा-मेरा छूटने से खुशी बहुत होने लगी। मेरा-मेरा लोभ-मोह पैदा करता है। ना मिले तो क्रोध आता है। कुछ पास नहीं है तो ख्याल चलता, दुनिया में मैं कैसे चलूँ? दुनिया जो करती है, वो मैं नहीं कर सकती। अब वो करें जो भगवान सिखाता है। दुनिया को भी भगवान से सीखने की ज़रूरत है। (क्रमशः)

पुरुषोत्तम संगमयुग में कानून की मर्यादा और महिमा

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

दुनिया के कई देशों में राजनैतिक दलों को बड़ी-बड़ी कंपनियाँ धन-दान दे सकती हैं पर कई देशों में धन-दान के ऊपर प्रतिबंध भी है। भारत में अब यह कानून बनाया गया है कि अगर कोई भी व्यक्ति राजनैतिक दल को धन देगा तो उसकी कर योग्य आय में से ऐसे धन को सौ प्रतिशत छूट मिलेगी। अब स्थिति यह है कि यदि एक व्यक्ति ने किसी धर्मादा संस्था को धन दान दिया तो उसको उसकी आमदनी का 5% ही आय में से छूट मिलेगी। मिसाल के तौर पर एक व्यक्ति, जिसकी आमदनी दो लाख रुपये है, उसने धार्मिक संस्था को तीस हज़ार रुपये दान में दिया है तो उस व्यक्ति को उसके 2,00,000 रुपये की आमदनी का 10% अर्थात् 20,000 रुपये और उसका 50% अर्थात् 10,000 रुपये ही आय में से छूट मिलेगी और उस पर वर्तमान में 30% कर के हिसाब से 3,000 रुपये की आयकर की बचत होगी परंतु वही व्यक्ति अगर किसी राजनैतिक पार्टी को तीस हज़ार रुपये दान में देता है तो उसको पूरे तीस हज़ार रुपये आय में से छूट मिलेगी और उस पर 30% टैक्स के हिसाब से 9,000 रुपये की बचत होगी। राजनैतिक कारोबार में लोग ज़्यादा रुचि लें और राजनीति को अपना धर्म समझ लें, इसलिए सरकार ने यह प्रावधान रखा है। सरकार ने राजनैतिक दल के गठन की विधि भी सरल बना दी है। कोई भी सात व्यक्ति इकट्ठे होकर एक सौगंधनामा करें कि हम लोग मिलकर इस राजनैतिक दल की स्थापना करते हैं और आयकर में वह सौगंधनामा रजिस्टर्ड करा दें तो वह पार्टी नये राजनैतिक दल के रूप में कानूनी दृष्टि से कारोबार कर सकती है। उस दल को चैरिटी कमिश्नर के ऑफिस में भी रजिस्टर नहीं कराना पड़ेगा। इस तरह से सरकार नये-नये राजनैतिक दलों को अस्तित्व में लाने के लिए छूट दे रही है। आज भारत में 500 से भी अधिक राजनैतिक दल हैं और ऐसे दलों को उनकी आमदनी के स्रोत और खर्चों के बारे में कोई भी नहीं पूछ सकता। चुनाव आयोग भी ऐसे दलों से खर्चों के बारे में नहीं पूछ सकता।

सरकार के कानून ईश्वरीय विश्व विद्यालय जैसी संस्थाओं के लिए भी समस्या खड़ी करते हैं। सन् 1973 के बजट में ऐसा प्रावधान रखा गया था कि भंडारी की आमदनी पर दो तिहाई टैक्स लगेगा और एक तिहाई बचत ही संस्था को मिलेगी अर्थात् एक संस्था की आमदनी अगर भंडारी से तीन लाख रुपये है तो उसके ऊपर दो लाख रुपये का टैक्स लगने वाला था और संस्था को एक लाख रुपये ही मिलने वाले थे। इस बात पर लोगों ने बहुत हंगामा किया परिणामस्वरूप सरकार ने एक कमेटी बनाई जिसने सन् 1975 में अपनी रिपोर्ट में कहा कि भारत की जनता में गुप्त दान की बहुत महिमा है और गुप्त दान के बारे में कहा जाता है – गुप्त दान महादान। इस रिपोर्ट के आधार पर सरकार ने भंडारी प्रणाली को कर-मुक्त ही रखा। अपने ईश्वरीय विश्व विद्यालय में भी इसके ऊपर काफी चर्चा हुईं, दो विचार थे, एक विचार तो था कि दैवी परिवार की बहनों को हाथ में धन देवें और दूसरा विचार था कि भंडारी में ही धन जमा करावें।

भंडारी के कारण, दाता ने कितना धन दिया, यह मालूम नहीं चलता था, उस पर एक विचार था कि कोई कहेगा कि सौ रुपये दिये हैं और भण्डारी में पचास रुपये ही डालेगा तो यज्ञ का कारोबार कैसे चलेगा परंतु अगर बहनों के हाथ में धन दिया तो उससे मालूम पड़ेगा कि दाता ने कितना धन दान दिया। यह प्रश्न हम

सबने मिलकर अव्यक्त बापदादा से पूछा तो अव्यक्त बापदादा, अगस्त 1975 में इस बात का उत्तर देने के लिए संदेशी के तन में आये और कहा कि भंडारी प्रणाली ही यज्ञ कारोबार में रहेगी। यह जो एक भय था कि कोई भी दाता कहेगा कि सौ रुपये दिये हैं और भंडारी में पचास ही रखेगा तो उस पर अव्यक्त बापदादा ने बताया कि मेरे बच्चे ऐसे नहीं हैं, मेरे बच्चों को मैं जानता हूँ, वे सच का ही कारोबार करेंगे और धन के लोभ में नहीं आयेंगे। इस प्रकार से अव्यक्त बापदादा ने हम बच्चों की सत्यनिष्ठा पर अपनी श्रद्धा और विश्वास व्यक्त किया। यही बात फिर से सन् 2006 में आई और सरकार ने कानून में यह बात रखी कि अगर किसी भी दाता का पूरा ही नाम-पता आदि नहीं है तो उस पर आयकर लगेगा अर्थात् भंडारी प्रणाली धार्मिक और धर्मादा संस्थाओं को छोड़कर बाकी सभी संस्थाओं के लिए रद्द कर दी गई। इससे संबंधित अन्य कई कारणों के आधार पर बाबा के इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय को धार्मिक संस्था के रूप में रूपांतरित करना पड़ा।

सन् 2009 के बजट में सरकार ने ऐसा प्रबंध रखा है कि अगर कोई संस्था शैक्षणिक या मेडिकल क्षेत्रों में कार्य करती है, वह अगर भंडारी प्रणाली द्वारा धन प्राप्त करती है तो उसकी कुल आमदनी का 5% या एक लाख रुपये, जो भी अधिक हो, उस सीमा तक भंडारी की राशि पर टैक्स नहीं लगेगा, बाकी पर लगेगा।

मान लीजिए, एक शैक्षणिक संस्था या अस्पताल की वार्षिक आमदनी बीस लाख रुपये है जिसमें पाँच लाख रुपये भंडारी के शामिल हैं। बाकी जो धन मिला है उसके दाताओं का अगर पूरा ही ब्योरा उसके पास है तो उसकी बीस लाख की आमदनी का 5% अर्थात् एक लाख रुपये के ऊपर टैक्स नहीं लगेगा बाकी की चार लाख रुपये की आमदनी पर 30% के हिसाब से 1,20,000 रुपये का टैक्स भरना पड़ेगा। इस तरह से सरकार दान में मिले हुए धन के ऊपर समय प्रति समय टैक्स लगाने का सोचती रहती है जो समझ से परे है। दानदाता ने तो अपनी आमदनी पर टैक्स भर ही दिया है। फिर ऐसी टैक्स भरी हुई आमदनी पर सरकार दुबारा टैक्स लगाने का प्रयत्न कर रही है, यह कहाँ तक न्याययुक्त और तर्कसंगत है, यह सोचने की बात है!

दान की तो अनेक प्रकार की महिमा है ही, धनदान, विद्यादान, गौदान, रक्तदान आदि-आदि और इन सबमें सिर्फ धनदान पर ही टैक्स लगाने की बात सरकार कर रही है। आगे चलकर सरकार क्या-क्या कारोबार करेगी, मालूम नहीं है परंतु ऐसा लग रहा है कि समय के साथ-साथ हमें भी अपनी विचारधारा में और कानूनी बातों में परिवर्तन करना पड़ेगा और इसीलिए हमने यह लेख लिखा है कि कैसे कानून के द्वारा समाज के अंदर विचारधाराओं में परिवर्तन हो सकता है। इसलिए हमें सदा ही जागृत रहना पड़ता है कि हमारे आर्थिक कारोबार में किस प्रकार का विधि-विधान होना चाहिये। ईश्वरीय सेवा में कानून की बातों की भी समझ आवश्यक है क्योंकि कानून की मर्यादा में रहकर कारोबार करते हैं तो कारोबार में सदा ही कानून की मदद मिलती है, कानून हमारा सहायक बनता है और निर्विघ्न ईश्वरीय सेवायें चल सकती हैं।

लौकिक कानून के साथ-साथ ईश्वरीय कानून को जानना और उस अनुसार कर्म करना भी बहुत ज़रूरी है क्योंकि परमात्मा को भी धर्मराज कहते हैं। अगर पापकर्मों का लेप-क्षेप थोड़ा भी रहा हुआ होगा तो आखिर में धर्मराज की कचहरी में जाना ही पड़ेगा। कहानी भी है कि युधिष्ठिर को भी धर्मराजपुरी में अपने भाइयों के साथ जाना पड़ा क्योंकि युधिष्ठिर ने महाभारत युद्ध में 'अश्वत्थामा हतोहते नरोवा कुंजरोवा' कहा, इस एक झूठ बोलने के फलस्वरूप उन्हें नर्क का दृश्य देखना ही पड़ा। हम आत्मायें ऐसा प्रयत्न करें कि हमें धर्मराजपुरी में जाना न पड़े और सीधा ही परमात्मा पिता के साथ अपने घर शान्तिधाम चले जायें। ❖

परमात्म शक्तियों और वरदानों की अनुभूति

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

परमात्मा पिता अनन्त शक्तियों और वरदानों के भण्डार हैं परंतु प्रश्न यह उठता है कि इन शक्तियों और वरदानों को प्राप्त करने वाला कौन है? जैसे बरसात पड़ती है तो प्यासी धरती उसे सोख लेती है और बदले में हरी-भरी होकर जगत की पालना करती है। सूर्य की धूप आती है, उसे मानव शरीर, पेड़-पौधे, जीव-जंतु स्वीकार कर उपयोग में लाते हैं। हवा चलती है, उससे भी मानव तथा पर्यावरण लाभान्वित होता है। ये सब भौतिक शक्तियाँ हैं जिन्हें यह स्थूल जगत प्राप्त करता है और अपनी क्रियाओं को आगे बढ़ाता है परन्तु ईश्वरीय शक्तियाँ और वरदान तो सूक्ष्म हैं। उन्हें प्राप्त करने वाली कोई सूक्ष्म सत्ता ही होनी चाहिये। यह सूक्ष्म सत्ता कौन है? वास्तव में, मानव शरीर स्थूल और सूक्ष्म दो शक्तियों से निर्मित है। स्थूल है यह शरीर और सूक्ष्म है आत्मा। आत्मा एक अभौतिक ऊर्जा है जो भौतिक शरीर की भृकुटी में स्थित हो इसे संचालित करती है। यह अति सूक्ष्म, स्थूल नेत्रों द्वारा न देखी जा सकने वाली, अति शक्तिशाली सत्ता है। यह रूप में ज्योतिबिन्दु है और मन, बुद्धि, संस्कार सहित है। सोचना, याद रखना, निर्णय करना, कल्पना करना आदि सभी गुण इस चेतन आत्मा में ही हैं। आत्मा के चले जाने पर शरीर मात्र पाँच तत्वों का निर्जीव ढांचा रह जाता है। ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों को ग्रहण करने वाली यह आत्मा ही है। ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों की प्राप्ति के लिए आत्मा (मन-बुद्धि-संस्कार सहित) इंद्रियों से न्यारी हो जाती है। इस अवस्था में इसकी ग्रहण शक्ति असीमित हो जाती है।

शक्तियों और वरदानों का दाता

परमपिता परमात्मा शिव सर्वशक्तिवान हैं, वे ही शक्तिदाता और वरदाता भी हैं। परमात्मा शब्द में ही परमात्मा पिता का सत्य परिचय समाया हुआ है। परम का अर्थ है सर्वोच्च। संसार में अनेकानेक आत्मायें हैं जैसे देवात्मा, महात्मा, पुण्यात्मा, धर्मात्मा, साधारण आत्मा, पापात्मा आदि। परमात्मा इन सभी से ऊँचे हैं। जैसे कोर्ट कई होती हैं पर सुप्रीम कोर्ट एक होती है। मंत्री कई होते हैं पर प्रधानमंत्री उनमें से ही एक होता है, ऐसे ही करोड़ों आत्माओं में जो सुप्रीम है, प्रधान है, हेड है, मुख्य है, वही परमपिता परमात्मा है।

जैसे आत्मा ज्योतिबिन्दु स्वरूप है, परमात्मा पिता भी रूप में वैसे ही हैं, हाँ, वे गुणों में सिन्धु हैं। उनके बड़े होने का अर्थ है – पवित्रता, ज्ञान, गुण, शक्तियों में बड़े। वे सर्वात्माओं के माता-पिता, बन्धु-सखा, शिक्षक-सतगुरु हैं और धर्मग्लानि के समय सृष्टि पर अवतरित हो, पतित आत्माओं को पावन बनाने का दिव्य कर्त्तव्य करते हैं। जब आत्मायें पावन बन जाती हैं तो सृष्टि पर स्वर्ग की स्थापना हो जाती है और परमात्मा पिता अपने कर्त्तव्य की पूर्ति के बाद पुनः अपने परमधाम को लौट जाते हैं।

ईश्वरीय शक्तियाँ

भक्त लोग भी भगवान से शक्ति माँगते हैं, मंदिर में जाकर प्रार्थना करते हैं, 'इतनी शक्ति हमें देना दाता..' परन्तु प्रश्न यह है कि क्या माँगने मात्र से शक्तियाँ मिल जाती हैं? सदियों से मानवात्मायें भगवान से करबद्ध माँगें जा रही हैं और फिर भी मानवीय दुर्बलताएँ सर्वत्र प्रसारित (व्याप्त) हैं। इन मानवीय दुर्बलताओं का ही परिणाम है वैर, चिन्ता, हिंसा, भय, अपराध, उग्रवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता आदि। अतः मानवीय समाज को दुर्बलताओं से मुक्त कर शक्तिसंपन्न, निर्विघ्न, सदाचारी, सुखी और समृद्ध बनाने के लिए ईश्वरीय शक्तियों को प्राप्त करने का तरीका जानना अति अनिवार्य है।

संसार में जड़ पदार्थों में भी

अपनी-अपनी शक्ति होती है। जैसे कुनीन के पौधे में मलेरिया को ठीक करने की शक्ति रहती है, पानी में शीतलता की शक्ति है, पृथ्वी में सहन करने की और सूर्य में ताप तथा प्रकाश की शक्तियाँ निहित हैं। जब छोटी-छोटी चीज़ों में भी अपनी-अपनी शक्तियाँ हैं तो सारे जगत के स्वामी पिता परमात्मा तो अनेक दिव्य और सूक्ष्म शक्तियों के भंडार हैं, कुछ अग्रलिखित हैं –

1. ज्ञान की शक्ति – भगवान ज्ञान के सूर्य हैं। उनमें सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के ज्ञान की शक्ति है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने से अंधकार दूर हो जाता है। चारों ओर रोशनी फैल जाती है। सूर्य की किरणें अनेक प्रकार की गंदगी, कीटाणुओं को नष्ट कर देती हैं। सूर्य की सकाश मिलते ही पेड़-पौधे ऑक्सीजन देना शुरू कर देते हैं। जीवन सक्रिय हो जाता है। ऊर्जा का संचार होने लगता है। ऐसे परमात्मा पिता जो ज्ञान सूर्य हैं, उनका उदय होना अर्थात् विश्व से अज्ञानता के अंधकार का नष्ट होना। उनकी दिव्य शक्तियों की किरणें जब विश्व में फैलती हैं तो शक्तिहीन आत्मायें भटकने से, ठोकर खाने से बच जाती हैं। जीवन का परिवर्तन हो जाता है। विकारों की गंदगी, अवगुणों रूपी कीटाणु नष्ट होने लगते हैं। आत्मा कर्मेन्द्रियजीत, मायाजीत, विकर्माजीत और कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर लेती है।

2. गुणों की शक्ति – जैसे पानी का सागर विशालता को लिये हुए है, बाहर से ऊँची लहरें हैं, अंदर गहरी शान्ति है, शीतलता है। गहराई में रत्नों को छिपाकर रखता है। ऐसे ही परमात्मा सर्वगुणों के सागर हैं। आत्मा के व्यर्थ को निकालते हैं। जिसने उनमें डुबकी लगाई उसने सर्वगुणों रूपी रत्न पाये। असीम शान्ति का अनुभव किया। सच्चे नि:स्वार्थ प्यार का अनुभव, परमानंद का अनुभव सागर की गहराई में जाने से ही होता है। सागर बेहद का अनुभव कराता है, हद की दीवारें तोड़ देता है। गुणों का सागर परमात्मा शान्ति, प्यार और सुख से आत्मा को भरपूर कर देता है। यही परमात्म शक्ति है।

3. सर्व संबंध निभाने की शक्ति – जैसे लौकिक मात-पिता बच्चों को जन्म दे, उनकी पालना करते हैं। उन्हें अच्छी खुराक, अच्छी पढ़ाई से स्वस्थ और स्व-निर्भर बनाते हैं, संगदोष से बचाते हैं। ऐसे ही परमात्मा हम सब आत्माओं के सच्चे मात-पिता हैं। हमारी आँख खुलते ही वे सर्व शक्तियों की सकाश देकर, ज्ञान की पौष्टिक खुराक खिलाकर आत्मा को शक्तिशाली बना देते हैं। अपने श्रेष्ठ संग का रूहानी रंग लगाकर देह, देह के संबंध रूपी बंधनों से आत्मा को मुक्त कर देते हैं।

परमशिक्षक के रूप में उनकी शिक्षायें ही जीवन की रक्षा करती हैं। परमात्मा द्वारा दिये गए सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के ज्ञान से आत्मा विशालबुद्धि, दूरंदेशी बन जाती है। बने बनाये ड्रामा के ज्ञान से आत्मा निश्चिंत, अचल-अडोल, एकरस स्थिति में रहती है। ज्ञान की शक्ति से हर परिस्थिति को पार करना बहुत सहज हो जाता है।

परमसतगुरु के रूप से वे मार्गदर्शक बन श्रेष्ठ मत द्वारा विकारों रूपी भवसागर से हमें पार लगा देते हैं। गति और सद्गति, मुक्ति और जीवन्मुक्ति का वर्सा देते हैं। साथ-साथ कर्मों की गहन गति की समझ देकर श्रेष्ठ कर्म करना सिखाते हैं। विकारों और विकर्मों से मुक्त बना देते हैं। वर्तमान के साथ-साथ पूर्व के कर्मबंधनों से मुक्त कर पवित्रता के शिखर पर पहुँचा देते हैं।

कई लोग ऐसा समझकर भगवान से डरते हैं कि ना जाने वे सर्वसमर्थ कब क्या कर दें – किसी को मार दें, प्रलय ला दें, श्राप दे दें परन्तु भगवान सर्वसमर्थ होते भी सर्व के कल्याणकारी हैं। तीनों लोकों और तीनों कालों में वे कोई भी अकल्याण का कार्य कभी करते ही नहीं। इसीलिए वे शिव अर्थात् सदा कल्याणकारी, मंगलकारी हैं। उनकी हर शक्ति में, हर अभिव्यक्ति में विश्व के कल्याण की मिठास भरी होती है।

जैसे सूर्य से किरणें प्राप्त करने के लिए माँगने की नहीं वरन् उनके सम्मुख आने की ज़रूरत है इसी प्रकार ज्ञान-सूर्य भगवान से भी शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए मन-बुद्धि से उनके सम्मुख आने की ज़रूरत है। परमात्मा से शक्ति लेने के लिए उनके साथ मन-बुद्धि का सही कनेक्शन चाहिए।

मानव की बुद्धि ही मानव का तीसरा नेत्र है, अत: बुद्धि द्वारा परमधाम निवासी परमात्मा शिव के बिन्दु रूप, ज्योति स्वरूप को निहारते हुए, मन द्वारा यही संकल्प चलाने चाहिएँ, ''परमप्रिय परमात्मा पिता, आप सर्वशक्तियों के भण्डार हैं, दाता हैं। आप कल्याणकारी और रहमदिल हैं। आप सर्वसमर्थ और विश्वपरिवर्तक हैं। मैं आत्मा आपका अविनाशी बच्चा हूँ। जैसे आप हैं, वैसा ही मैं भी हूँ। आप सर्व शक्तिवान का बच्चा मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, सर्व का कल्याणकारी और रहमदिल हूँ। प्यारे शिवबाबा, किरणों के रूप में आपकी शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, कल्याण की शक्ति, पवित्रता की शक्ति, ज्ञान की शक्ति मुझ आत्मा पर उतर रही हैं। मैं इन शक्तियों से भरपूर होता जा रहा हूँ। इन शक्तियों रूपी किरणों ने मेरे चारों ओर लाइट का कवच निर्मित कर दिया है जिसमें मैं सदा सुरक्षित हूँ। ये शक्तियाँ मुझसे बिखर कर चारों ओर विश्व के वायुमण्डल तथा आत्माओं में बल भर रही हैं।''

इस प्रकार मनन करते-करते आत्मा को असीम आत्मबल और ईश्वरीय बल की अनुभूति होती है और इस अनुभूति के बल से उसके साकार कर्मों में असंभव को भी संभव करने जैसी चमत्कारी शक्ति आ जाती है। जैसे आजकल मोबाइल कम्पनियों ने जहाँ-तहाँ मोबाइल टावर लगाये हैं। ये टावर अपनी किरणों द्वारा सिग्नल देकर ग्राहकों को बात करने की सुविधा प्रदान करते हैं। जो मोबाइल इन किरणों के क्षेत्र से बाहर होता है, उसे सुविधा नहीं मिल पाती। इसी प्रकार, परमात्मा पिता भी सर्वशक्तियों और वरदानों के ऊँचे से ऊँचे टावर हैं। वे भी अपनी किरणों के माध्यम से शक्तियों और वरदानों का अनुभव आत्मा रूपी बच्चों को करवाते हैं।

ईश्वरीय वरदान

शक्ति प्राप्त करने में थोड़ा पुरुषार्थ करना पड़ता है परन्तु वरदान का अर्थ है बिना माँगे, बिना पुरुषार्थ किये सहज और अनायास होने वाली प्राप्ति। वर्तमान समय ही वरदानी है। जिस भगवान को, लंबी-लंबी साधनायें करके, जीवन को अनेक कष्ट देकर, अनेक जन्मों में हम नहीं पा सके, वो दयालु परमात्मा वर्तमान संगमयुग (कलियुग और सतयुग का संधिकाल) में हमारे सामने साकार में अवतरित हैं।

आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति तथा जीवन्मुक्ति का अनुभव एक सेकंड में कर लेना ही उनका वरदान है। आत्मा के जन्म-जन्म के विकार और पाप उनकी दृष्टि मात्र से समाप्त हो जाते हैं। उनके वरदानों से आत्मा की आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की दरिद्रताएँ समाप्त हो जाती हैं। सम्मुख आना ही वरदान पाना है। मन एकाग्र हो जाना, दिव्यता का प्रकाश मन में खिल जाना, मन का सकारात्मक और शक्तिशाली बन जाना, बोल का वरदानी बन जाना और दृष्टि में रहम तथा कल्याण की भावना आ जाना – ये सब ईश्वरीय वरदानों का ही प्रतिफल है। जिसका जितना दिल का स्नेह है उतना उसे वरदानों की प्राप्ति होती है। फिर दान करने से वरदान बढ़ते हैं। सफल करने से सफलता मिलती है।

वरदाता के वरदानों का अनुभव करने के लिए दिल बहुत सच्चा साफ चाहिए। अन्दर एक बाहर से दूसरा रूप न हो। कथनी-करनी समान हो, याद अव्यभिचारी हो। एक बल एक भरोसा, इसी आधार पर चलते रहें। जिनके पास दिखावा नहीं है, जो पूरे ट्रस्टी हैं, परमात्मा की अमानत में ख्यानत नहीं करते, श्रीमत के कदम पर कदम रखकर चलते हैं, उन्हें हर कदम में वरदानों की अनुभूति होती है, जीवन ही वरदानी बन जाता है। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत के संपादकीय लेख से मैं बहुत प्रभावित होता हूँ। हर लेख में कुछ न कुछ अमृत भरा रहता है। अप्रैल 09 के अंक में 'सुन्दरता: आवरण की या आचरण की' संपादकीय लेख में बहुत अच्छा उदाहरण देकर समझाया गया है। आपके ऐसे कई लेख मैंने पढ़े हैं। ज्ञानामृत मनुष्य को अज्ञान निद्रा से जगाती है। पुरुषोत्तम संगमयुग के बारे में पढ़कर बहुत अच्छा लगता है।

– ब्र.कु.एस.पुंडलीकराव, हैदराबाद

जून 09 के अंक में ब्र.कु. नरेश जी का सारगर्भित लेख 'जीभ प्रबंधन' बहुत ही श्रेष्ठ व मार्गदर्शक लगा। वास्तव में जीभ को वश में कर लेने से व्यक्ति अपना इहलोक व परलोक दोनों सुधार सकता है।

– ब्र.कु. दीपक गोस्वामी, बहजोई (मुरादाबाद)

सुसंयोग से पहली बार 'ज्ञानामृत' पढ़ी, मुझ 74 वर्षीय पत्रकार व अध्यात्म-विचारक को यह अति ज्ञानवर्धक, सच्चे आध्यात्मिक मित्र के रूप में प्रेरणादायक लगी। संपूर्ण पत्रिका में प्रकाशित आलेख, गीत और स्तंभ सामग्री सराहनीय है। विशेष रूप से 'जीभ प्रबंधन', 'जीवन जीने का ढंग', 'जो डर गया वो मर गया', 'निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनिए', 'रिश्तों की गरिमा' के लेखकों की प्रस्तुति सराहनीय एवं मानव कल्याणार्थ मार्ग प्रदर्शक के रूप में पत्रिका में एक अमूल्य संग्रह है, जो बधाई योग्य है।

– रमेश चन्द्र पाण्डेय, कानपुर

मई 09 अंक में प्रकाशित लेख 'क्यों कलंकित हुए पवित्र रिश्ते4?' में बहुत गहराई से समझाया गया है। ज्ञानामृत पढ़ने से मेरी मानसिक स्थिति सुधरी है, जीवन का मूल्य बढ़ा है। 'ज्ञानामृत' जैसी दिव्य पत्रिका बर्थ डे, मेरिज डे और अन्य कई प्रसंगों में गिफ़्ट के रूप में दी जानी चाहिए।

– ब्र.कु. केतन भाई, जूनागढ़

जून अंक में दादी जानकी का लेख 'पुराना कुछ भी अंदर न रहे', दादी शान्तामणि का लेख 'मम्मा गुणों की खान थी' तथा 'जीभ प्रबंधन' पढ़कर बहुत आनन्द आया। ज्ञानामृत अंधों की लाठी है, जिगरी दोस्त है, सही रास्ता दिखाती है।

सागर में पानी बहुत,
गागर में आता नहीं
दिल में अरमान बहुत,
पत्र में समाता नहीं
बाबा बिना, ज्ञानामृत बिना,
मज़ा आता नहीं।

– ब्र.कु. विमला, बड़ौदा (मंगलवाडी)

जून 09 अंक में प्रकाशित 'मम्मा गुणों की खान थी' लेख में बहुत बारीकी से माँ जगदम्बा सरस्वती जी की जीवन-गाथा पढ़कर मन खुशी से गद्‌गद हो उठा। ब्रह्मा बाबा की जीवनी से तो परिचित होते रहते हैं परन्तु मम्मा के जीवन के बारे में ऐसे प्रेरणादायी लेख पढ़ने को नहीं मिल पाते। सचमुच में मम्मा गुणों की खान थी, त्याग-तपस्या की मूर्ति थी। उनका जीवन सर्व ब्राह्मणों के लिए प्रेरणादायी रहा है। हमें भी उनके पदचिन्हों पर चलकर अपना जीवन श्रेष्ठ बनाना है। लेख के लिए दादी शान्तामणि जी को दिल से बहुत-बहुत शुक्रिया!

– ब्र.कु. कालू राम, टोंक

'रिश्तों की गरिमा – एक निरीक्षण' जून 09 के लेख के संबंध में हमें छह पत्र प्राप्त हुए हैं। स्थानाभाव के कारण हम सभी पत्रों को प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं। तीन पत्रों में प्रशंसा की गई है और तीन में लेख के प्रति आलोचनात्मक भाव व्यक्त किया गया है। दोनों ही प्रकार के पत्र स्वागत योग्य हैं। लेख की विषय-सामग्री के संबंध में और अधिक विचार-विमर्श हो सकता है क्योंकि हरेक व्यक्ति का निजी दृष्टिकोण है। उमंग भरी प्रतिक्रिया के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई!

– सम्पादक

धर्मनीति और राजनीति का एक स्वर

'धान का कटोरा' समझे जाने वाले प्रान्त छत्तीसगढ़ (तब मध्यप्रदेश राज्य का हिस्सा) में जब सन् 1981 में राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के चरणकमल पड़े तो उनके उद्‌गार थे, अब इस क्षेत्र को 'ज्ञान का कटोरा' बनाना है।

वरदानी दादी के ये बोल उस समय सबके सामने साकार हो उठे जब 2 अगस्त, 2009 को छत्तीसगढ़ राज्य की समस्त विधानसभा, राजहंसों के टोले की मुआफ़िक़ ज्ञान-सरोवर में डुबकी लगाने आबू की सुरम्य पहाड़ियों पर आ पहुँची।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सेवाओं के 73 वर्षों के इतिहास में 2 अगस्त का दिन एक स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ने के निमित्त बना। मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, विधानसभा अध्यक्ष धर्मलाल कौशिक, नेता प्रतिपक्ष भ्राता रविन्द्र चौबे के नेतृत्व में केबिनेट मंत्रीगण, मंत्रीगण, विधायकगण, सचिवगण, अधिकारीगण तथा उनके परिवार के सदस्यों के उल्लसित चेहरों से ओमशान्ति भवन का कण-कण आनन्दित हो उठा।

पर्यटन मंत्री भ्राता बृजमोहन अग्रवाल, बाल्यकाल से ही संस्था की सेवाओं से जुड़े रहे हैं। उद्‌गार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में राजा लोग ऋषि-मुनियों से

वरदान और मार्गदर्शन लेने जाते थे। धर्मनीति का अंकुश, राजनीति को सदा ही सुमार्ग दिखाता रहा है। अध्यात्म अपने विशुद्ध रूप में मानव के सोए सत्य को जाग्रत करता है। इस विशुद्ध अध्यात्म का रूप हमें आबू में चारों ओर विस्तृत नज़र आ रहा है। हम यहाँ सशक्त होने आये हैं।

संस्था के कार्यकारी सचिव भ्राता मृत्युन्जय, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने मुख्यमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष तथा अन्य मंत्रीगण का शाल ओढ़ाकर, अभिनन्दन-पत्र भेंट कर, मुख मीठा कराके हार्दिक अभिनन्दन किया। सभी विधायकगण का पुष्पगुच्छ से सम्मान किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह की विचाराभिव्यक्ति इस प्रकार हुई, सम्मान और अभिनन्दन तो हमें आपका करना चाहिए पर यह उल्टी गंगा बहा रहे हैं आप। हम आपसे सीखने आये हैं और आप हमें इतना प्यार, अपनापन, सम्मान दे रहे हैं, हम अभिभूत हैं। दादी जानकी से हुई अपनी भेंट को भावभीने शब्दों में प्रकट करते हुए कहा, दादी जी ने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे अपने पास बिठाया, मुझे मेरी माँ याद आ गई, मुझे इतना प्यार दिया। प्यार भी करती हैं पर सम्मान भी इतना देती हैं कि मुझे 'भाई' कहती हैं, मुझे भ्रातृत्व स्नेह की राखी भी बाँध दी जबकि मैं तो उनके आगे बच्चे जैसा ही हूँ।

छत्तीसगढ़ के जन-जन में लोकप्रिय, नम्रचित्त, सरलचित्त, उदारदिल मुख्यमंत्री जी ने कहा, मैं अपने सभी साथी-सहयोगियों के साथ यहाँ सभी पद-पोजिशन, कुर्सी का भान उतारकर जिज्ञासु बनकर राजयोग सीखने आया हूँ। दो दिन के इस प्रवास के दौरान मैं वो सूत्र सीखना चाहता हूँ जिससे छत्तीसगढ़ को शान्ति और विकास का मार्ग एक साथ दिखा सकूँ।

सन् 2005 में 'इंडिया टुडे' के सर्वे से सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री के रूप में माने गए डॉ. रमन सिंह ने कहा कि मैं पिछले कई वर्षों से रायपुर तथा संस्था के अन्य केन्द्रों पर जाता रहा हूँ। मेरे मन में यह प्रश्न सदा उठता था कि ये ब्र.कु. बहनें-भाई निःस्वार्थ भाव से रात-दिन सेवा में रत रहते हैं। घर-परिवार, संसार और इच्छाओं को जीतने वाले इन भाई-बहनों को ऐसी महान प्रेरणा कहाँ से मिलती है, इनकी ऊर्जा का केन्द्र आखिर कहाँ है?

यहाँ आबू में पहुँचकर मैंने उस ऊर्जा के केन्द्र को पहचान लिया है। यहाँ ओमशान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन के कण-कण में ऊर्जा बिखरी पड़ी है। मैं इसी ऊर्जा की खोज में था। नेता प्रतिपक्ष की महिमा करते उन्होंने कहा कि वे धर्म के मामले में मुझसे बहुत आगे हैं। मैं भी उनसे सीखता हूँ। मुख्यमंत्री ने अपने राज्य की लगभग 2 करोड़ 27 लाख जनता को अध्यात्म की किरणों से रोशन करने के लिए आदरणीया दादी हृदयमोहिनी को छत्तीसगढ़ विधानसभा में वक्तव्य देने का भाव-भीना निमंत्रण दिया।

नेता प्रतिपक्ष ने संबोधन में कहा, मुझसे पत्रकारगण एक ही प्रश्न पूछ रहे हैं कि पक्ष और प्रतिपक्ष एक साथ, एक मंच पर एकत्रित कैसे? मैंने उत्तर दिया, हम यहाँ ना पक्ष हैं, ना प्रतिपक्ष, केवल जिज्ञासु हैं। आत्मा से परमात्मा का मिलन करके जो सुख-शान्ति और विकास जीवन में होता है, वह सीखने आये हैं। मुख्यमंत्री जी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि आप बड़े उदारदिल और हम सबको साथ लेकर चलने वाले हैं।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा, हमने आत्मा का परिचय, परमात्मा

का परिचय जाना। तनावमुक्त जीवन (डॉ.प्रेम मसंद) सत्र को सुनकर हमारे कई साथियों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की – 'क्या ऐसा सत्र हर मास में एक बार हमें मिल सकता है?' उन्होंने मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष को इस आयोजन का श्रेय प्रदान किया और उनके साथ मिलकर छ.ग. राज्य की तरफ से एक सुन्दर स्मृति-चिह्न दादी हृदयमोहिनी जी को भेंट किया। उन्होंने कहा, जैसे रस्सी के आते-जाते शिला पर भी निशान पड़ जाते हैं, उसी प्रकार आत्मा, परमात्मा की अनुभूति एक दिन में नहीं की जा सकती, इसके लिए नियमित अभ्यास की ज़रूरत है।

ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन ने छत्तीसगढ़ प्रवास के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वहाँ के निवासी बहुत ही भोले, सीधे और सरल हैं मानो 36 दैवीगुणों से विभूषित हों। विधानसभा प्रांगण में मुख्यमंत्री से हुई भेंट को याद करते हुए उन्होंने खुशी व्यक्त की कि आपने हमारे निमंत्रण को ससम्मान स्वीकार कर उसे साकार कर दिखाया।

भ्राता ओमप्रकाश जी ने छ.ग. राज्य की विशेषतायें सुनाईं तथा अभिनन्दन-पत्र पढ़ा। भ्राता मृत्युंजय ने सभी का दिल की गहराइयों से स्वागत किया। दादी हृदयमोहिनी जी ने भारत को रामराज्य बना देने का दृढ़ संकल्प सभी को प्रदान किया। इस प्रकार अनेक सुनहरे दृश्य दिखाकर, सुमधुर यादें छोड़ता हुआ तथा 'शान्ति के साथ विकास' इस एक स्वरलहरी में धर्मनीति और राजनीति को बाँधता हुआ यह दिन ड्रामा की रील में लिपट गया। ❖

ज्ञानामृत

ब्रह्माकुमार संतोष, चंद्रपुर

जीवन को सजाने का
कर रही है यह काम।
विश्व के कोने-कोने में
ज्ञानामृत का है नाम।।

निकलती मधुबन से
मिला है प्रभु वरदान।
सत्यज्ञान से करती
मानव का कल्याण।।

नई दिशा, नया उमंग
देती दिव्य उपहार।
बेमिसाल रूप देख
पढ़े मन बार-बार।।

प्रेम और भाईचारा
संसार में फैलाती है।
युगों-युगों से सोया
देवत्व जगाती है।।

सुलझाती है गहरी
उलझनें जीवन की।
हर पल याद दिलाये
अपने ऊँचे वतन की।।

दिलों को रोशन कर
नाता प्रभु से जोड़ती।
देती प्रभु का पैगाम
पा लो जीवन्मुक्ति।।

जीवन को प्रयोगशाला बनायें

• ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

सचमुच जीवन एक प्रयोगशाला है। इसमें मनुष्य निशिदिन अनेक प्रयोग करता है। सफलता-असफलता, हार-जीत, स्वास्थ्य या व्याधियाँ उसी के तो परिणाम हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान की, किसी दर्शन की या संकल्प शक्ति की सत्यता की परख हम प्रयोग करके ही तो कर सकते हैं। कोई मनुष्य चाहे कितना भी कहे कि उसका ज्ञान ही सम्पूर्ण सत्य है परन्तु यदि सत्य ज्ञान जीवन को शिवम् (कल्याण) न करे, उसमें सद्गुणों व सुन्दर विचारों की सुन्दरता न भरे तो वह ज्ञान सत्य कैसे माना जाएगा?

हमें अति गुह्य ईश्वरीय ज्ञान मिला है। उसमें अनेक गहन सिद्धांत जीवन को सरल व शक्तिशाली बनाने वाले हैं। योग की शक्ति, परमात्म-शक्ति, श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति व स्वमान की शक्ति को यदि हम जीवन में यथार्थ विधि से प्रयोग करें तो हम बड़ी से बड़ी व असम्भव लगने वाली समस्या को भी समाप्त कर सकते हैं। इतना ही नहीं, विचार बदलने से ही परिस्थिति बदल जाती है। संकल्पों की शक्ति से व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं। आज तक हमने हज़ारों प्रयोग दूसरों से कराये हैं व खुद भी किये हैं। हम उनका यहाँ विवरण देना चाहते हैं ताकि सभी वैसा कर सकें। इससे मनुष्य को अपनी आत्मिक शक्तियों में विश्वास होगा व उसका जीवन तो मानो अनुभवों की खान ही बन जाएगा।

जीवन में श्रेष्ठ अनुभव पाने के लिए मन को शान्त रखना परमावश्यक है। साथ ही साथ विचारों का सौन्दर्य भी हमारे पास हो, इसके लिए अमृतवेले स्वयं को परमानन्द से सम्पन्न करना आवश्यक है। एकान्त में परम बल है। कोई भी साधक या ज्ञानी एकान्त के बिना मन की महान तरंगों का सुख-पान नहीं कर सकता, तो प्रस्तुत हैं कुछ सिद्धांत व उन्हें अनुभव करने के तौर-तरीके –

भगवानुवाच – ''जो बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहते हैं, उनके पास विघ्न व समस्याएँ आ नहीं सकतीं तथा सफलता उनके आगे-पीछे घूमती है।''

मास्टर सर्वशक्विान का स्वमान, सर्वश्रेष्ठ स्वमान है। स्वीकार कर लें कि अलौकिक जन्म लेते ही सर्वशक्तिवान ने अपनी सारी शक्तियाँ मुझे दे दी हैं। वे सभी शक्तियाँ मेरे पास हैं परन्तु वे जागृत व कार्यरत तब रहती हैं जब हम इस स्मृति में रहते हैं कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। प्रयोग इस प्रकार करें -

अपने घर में या कार्यक्षेत्र पर तीन बार बैठकर इसका इस प्रकार अभ्यास करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, परमात्म-शक्तियाँ मेरे पास हैं, मेरे अंग-अंग से शक्तियों की किरणें फैल रही हैं....पंद्रह सेकण्ड एक बार दें और इक्कीस बार यही अभ्यास करें। ऐसा दिन में कोई भी तीन समय चुनकर करें। समस्याएँ लोप होती हुई नजर आयेंगी। ऐसा तीन मास तक अवश्य करें।

मान लो, आप नौकरी के लिए इन्टरव्यू देने जा रहे हैं, तो यह अभ्यास करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, ईश्वरीय शक्तियाँ मेरे पास हैं, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मेरा चुना जाना निश्चित है। बस मन में दृढ़ता हो कि यह होना ही है तो अवश्य होगा। संशय या नेगेटिव संकल्प ज़रा भी न हों।

दो सुन्दर प्रयोग –

• समस्याएँ या दुविधाएँ प्रभु-अर्पण कर दो तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

• स्वस्थिति श्रेष्ठ होगी तो परिस्थिति स्वत: ही बदल जाएगी।

ये दो सुन्दर प्रयोग ब्रह्मा-वत्सों को अवश्य करने चाहिएँ। मन जब भी किसी बात से भारी हो, उसे प्रभु-अर्पण कर दो। मन शांत हो जाएगा और ईश्वरीय मदद का अनुभव होने लगेगा। यहाँ प्रभु-अर्पण का यह अर्थ कदापि नहीं कि हम प्रयास या पुरुषार्थ

करना छोड़ दें। नहीं, वो तो हमें करते ही रहना है। परमात्म-अर्पण करने से परमात्म सहयोग प्राप्त होगा। सारा दिन जो भी कर्म किये हों, कर्मों के अच्छे व बुरे परिणाम मिले हों, सफलता-असफलता हुई हो, उसे भी रात को प्रभु-अर्पण किया करें।

संकल्प कर लें कि चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, मुझे मन की स्थिति नहीं बिगाड़नी है तो इससे सदा ही अनुभव होगा कि परिस्थिति बदल रही है। हमें मान लेना चाहिए कि कभी थोड़ी देर भी लगती है और जीवन में कुछ बातों को स्वीकार भी करना पड़ता है। हम कलियुग की काली रातों में रह रहे हैं, जहाँ सब कुछ बुरा ही बुरा है। यहाँ सत्य, विश्वास व ईमानदारी की ज़्यादा कामना भी नहीं करनी चाहिए। अपनी स्थिति को अचल-अडोल बनाने के लिए ज्ञान की कुछ बातों का सहारा लेना चाहिए। ड्रामा के ज्ञान को यूज़ करना चाहिए और स्वमान में अच्छी तरह रहना चाहिए।

स्वमान का प्रयोग करें -

भगवानुवाच – ''जो बच्चे स्वमान में रहते हैं, सम्मान परछाई की तरह उनके पीछे चलता है। स्वमान से ही अभिमान नष्ट होता है।''

परिवार में, समाज में या किसी भी संगठन में मनुष्य सम्मानपूर्वक जीना चाहता है परन्तु अभिमान उसे सम्मान प्राप्त नहीं होने देता। आप स्वमान में रहें, उसमें भी विशेष रूप से कि ''मैं एक महान आत्मा हूँ'', तो सब जगह स्वत: ही सम्मान प्राप्त होगा।

• मैं और मेरा, स्वमान से समाप्त होगा।

• यदि आप किसी भी स्थान के वातावरण को बदलना चाहते हैं तो विशेष रूप से इस स्वमान का अभ्यास करें कि मैं मास्टर ज्ञान-सूर्य हूँ।

• यदि आप विशेष विघ्न को समाप्त करना चाहते हैं तो दो स्वमानों का खास अभ्यास करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ तथा मैं विघ्न विनाशक हूँ।

• यदि आप चाहते हैं कि आपकी वाणी में प्रभाव आ जाए तो आप स्वमान के साथ आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करें।

घर में चार-पाँच बार अव्यक्त महावाक्य सुनें -

सवेरे उठते ही अव्यक्त महावाक्य सुनें, टेप रिकार्डर से या वी.सी.डी. प्लेयर से। पर्दे पर यदि अव्यक्त बापदादा का फोटो भी आ जाए तो अत्युत्तम होगा। इसे आधा घण्टा चलने दें। ऐसे ही सारे दिन में चार-पाँच बार सुनें, आपका घर अलौकिक बन जाएगा। यदि किसी कारण से यह सम्भव न हो तो स्वयं पढ़ लें।

पवित्रता की स्थिति को बढ़ाने के लिए प्रयोग करें -

प्रकृति तुरन्त हमारे पवित्र वायब्रेशन्स को ग्रहण कर लेती है। भोजन बनाते हुए 108 बार स्मृति में लायें कि मैं पवित्र आत्मा हूँ। जब आप भोजन खिला रही हों तो संकल्प करें कि इस भोजन को खाने से सबके चित्त शान्त हो जाएँ। तीन मास में आप वन्डरफुल परिणाम देखेंगे। स्वयं की पवित्रता भी बहुत बढ़ जाएगी। यदि आप बान्धेली हैं तो आप मुक्त हो जाएँगी।

भोजन खाने से पूर्व सात बार संकल्प करें कि मैं पवित्र आत्मा हूँ। पानी पीने के समय व चाय पीने के समय भी यही प्रयोग करें। दूध का कप सामने रखकर उसे दृष्टि देते हुए इक्कीस बार यही संकल्प करें व अनुभव करें कि मेरी आँखों से पवित्र किरणें निकलकर दूध में समा रही हैं, फिर उसे पीयें, पवित्रता नेचुरल होने लगेगी। याद रहे, कम से कम तीन मास यह प्रयोग अवश्य करें।

बाबा (भगवान) हजार भुजाओं सहित मेरे साथ है –

एक दृश्य दिन में कम से कम पाँच बार अभ्यास में लायें कि हम सूक्ष्मवतन में हैं या वतनवासी बापदादा हमारे सम्मुख हैं और दृष्टि देते हुए उन्होंने अपनी हज़ार भुजाएँ हमारे सिर पर फैला दी हैं तथा बाबा कह रहे हैं - 'बच्चे, मैं हज़ार भुजाओं सहित तुम्हारे साथ हूँ, मैं तुम्हारा हूँ, तुम्हारे लिए हूँ, जब भी तुम मुझे याद करोगे मैं तुम्हारी मदद में आ जाऊँगा।' इससे धीरे-धीरे यह आभास बढ़ने लगेगा कि स्वयं भगवान मेरे साथ है। यह

साधना पंद्रह दिन लगातार करें, उसके बाद प्रयोग करें, जब भी आवश्यकता पड़े, बाबा का आह्वान करें और उसकी मदद का अनुभव करें।

साक्षीभाव का अभ्यास करें –

यदि आप साक्षीभाव में स्थित रहो तो एक मास का काम एक घण्टे में ही कर सकते हो। यह सत्य है कि मनुष्य का मन अथवा उसका अन्तर्मन अनन्त शक्तियों का भण्डार है परन्तु मनुष्य व्यर्थ संकल्पों में व व्यर्थ वाचा में इस शक्ति को नष्ट कर रहा है। यदि वह स्वयं को व्यर्थ से मुक्त कर ले तो उसके अन्दर अतिशय कार्यक्षमता आ जाएगी।

कुछ दिन तक प्रतिदिन पाँच बार इस विश्व को व सबके पार्ट को साक्षी होकर देखें। विचार करें, कितना सुन्दर खेल चल रहा है इस विश्व रंगमंच पर। एक समय था, यहाँ देवयुग था, विश्व स्वर्ग था, चहुँ ओर सुखचैन की बंशी बजती थी, आज कैसा है यह विश्व....यहाँ सभी आत्माएं एक्टर हैं, सब अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं, यहाँ किसी का कोई दोष नहीं, यहाँ जो कुछ भी हो रहा है, वही सत्य है और वही होना चाहिए।

इस चिन्तन से हम शिव बाप की तरह साक्षीद्रष्टा व निश्चिन्त हो जाएँगे। हमारे कार्य शीघ्र पूर्ण होने लगेंगे व जीवन समस्याओं से मुक्त होता जायेगा।

शुभवृत्ति से वायुमंडल व दूसरे मनुष्यों में परिवर्तन करें -

आज प्रत्येक परिवार समस्याओं का गढ़-सा बन गया है। इसका मुख्य कारण है सम्बन्धों में असन्तोष, प्यार व सम्मान की कमी, प्रत्येक व्यक्ति में बढ़ा हुआ क्रोध व अभिमान तथा वाणी की कटुता। इससे मनुष्य को जीने का सुख नहीं मिल पा रहा है। भावनाएँ बिगड़ती जा रही हैं, एक-दूसरे को कोई भी साथ नहीं देता। इतना ही नहीं, मनुष्य का मन अकारण भी अशान्त व बेचैन रहने लगा है। यद्यपि यह सब कुछ अकारण भी नहीं है परन्तु कारण वर्तमान नहीं, पूर्व के पाप हैं।

आप शान्त मन से अपने ही घर में एक स्थान पर बैठ जाइये और सबको इस वृत्ति से देखिये कि घर के सभी लोग आत्माएँ हैं, ये भगवान के बच्चे हैं, ये देवकुल की महानात्माएँ हैं, अब ये हमारे परिवार में आये हैं, इससे पूर्व जन्म में ये अन्य किसी परिवार में थे। अब सबका कर्मों का हिसाब-किताब पूरा हो रहा है। शीघ्र ही सब अपने घर शान्तिधाम चलेंगे। प्रतिदिन दो बार ऐसा करें...सब कुछ बदल जायेगा।

दूसरों की बुद्धि परिवर्तन के प्रयोग

कोई व्यक्ति अति क्रोधी है, शराबी है, व्यसनी है, आपका धन नहीं लौटा रहा है, आपसे शत्रुता कर रहा है या आपके मार्ग में विघ्न डाल रहा है। आप किसी को ज्ञान में लाना चाहते हैं या अन्य कोई परिवर्तन करना चाहते हैं तो यह प्रयोग करें –

जब वह व्यक्ति सोया हो, प्रात: 4 या 5 या 6 बजे...उसे एक मिनट श्रेष्ठ वायब्रेशन्स दें अर्थात् याद करें कि मैं विश्व कल्याणकारी हूँ, मुझ आत्मा से किरणें निकलकर उस आत्मा को जा रही हैं। फिर उससे मन ही मन बातें करें। पहले तीन मुख्य संकल्प करें कि तुम एक अच्छी आत्मा हो, भगवान के बच्चे हो, तुम देवकुल की आत्मा हो...इससे उसमें स्वमान जागृत होगा।

फिर उससे बातें करें...शराब पीना अच्छा नहीं है, इसे छोड़ दो...तुम्हें महान बनना है, चरित्रवान बनना है, अपने परिवार का कल्याण करना है। जैसी परिस्थिति है, वैसी उनसे बातें करें। प्रतिदिन निश्चित समय पर 7 दिन तक करें, वह व्यक्ति बदल जाएगा।

इस तरह एक-एक बात को लेकर कुछ समय अभ्यास करें। यदि कभी सफलता न भी हो तो पुन: प्रारम्भ करें। जो केस 7 दिन में ठीक न हो तो 21 दिन तक प्रयोग करें। कुछ अभ्यास 3 से 6 मास तक भी करने होंगे। जैसे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ या साक्षीभाव का अभ्यास। इस तरह करने से ज्ञान की खुशी भी होगी, आत्मविश्वास भी बढ़ेगा व आपके प्रयोग की सफलता दूसरों को भी काम आयेगी। ❖

क्षमा वीरस्य भूषणम्

• ब्रह्माकुमारी शशि, आबू पर्वत

'क्षमा' शब्द की उत्पत्ति 'क्षम' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है शक्ति, बल, योग्यता, सामर्थ्य। दूसरे शब्दों में, क्षमा व्यक्तित्व का वह गुण है जिसमें कोई व्यक्ति अन्य द्वारा, अपने साथ किए गए दुर्व्यवहार या अपराध से दुखी न होकर, बदले में उसके प्रति सहृदयतापूर्ण व्यवहार करता है। राबर्ट ब्राउमिंग का कथन है – 'क्षमा करना अच्छा है, भूल जाना सर्वोत्तम है।' क्षमा शक्ति है, धर्म है, दुर्बलता नहीं। अपने में दण्ड देने की शक्ति होते हुए भी दोषी को दण्ड न देना ही क्षमा है। क्षमा, क्षमाशील का आत्मिक बल है जो उदारता, सद्भावना, सहृदयता, सहनशीलता, दयालुता, परोपकार, निःस्वार्थता, त्याग तथा समदृष्टि जैसे अनेक गुणों के रूप में परिलक्षित होता है।

क्षमा माँगने वाला भी महान है

क्षमा करना बहुत बड़ा दान भी है। क्षमा मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है। शास्त्रों में कहा गया है – 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण होती है। वह वीर ही तो है जो मान-अपमान, लाभ-हानि की परवाह किए बिना कर्त्तव्य का पालन करता है, शांत और संतुष्ट रहता है। उसकी सहनशीलता प्रबल होती है। वह शोषण में नहीं, पोषण में विश्वास करता है। क्षमा देने वाले की तरह, क्षमा माँगने वाला व्यक्ति भी महान ही होता है क्योंकि वह न केवल अपनी गलती को स्वीकार करता है वरन् भविष्य में उस गलती को न दोहराने का संकल्प भी लेता है। **क्षमा माँग लेने पर व्यक्ति की निन्दा, नफरत, क्रोध व दुर्भावना समाप्त हो जाती है। क्षमा या माफी माँगने से व्यक्ति छोटा नहीं हो जाता वरन् उसके इस कृत्य से जो विनम्रता का भाव प्रस्फुटित होता है उससे उसका कद पहले से कहीं अधिक बढ़ जाता है।** क्षमा मनुष्य को बदले की भावना से ऊपर उठाती है। इस भाव से परिपूर्ण व्यक्ति का हृदय विशाल होता है। इस अवस्था में उसका क्रोध एवं अहंकार समाप्त हो जाता है।

रहीमदास जी कहते हैं –

क्षमा बड़न को चाहिए,
छोटन को उत्पात।
का रहीम विष्णु का घट्यो,
जो भृगु मारी लात॥

क्षमादान से मिलते हैं शान्ति और सुकून

आम लोगों को क्षमा दुर्बलता का प्रतीक लगती है और क्रोध व हिंसा में शक्ति दिखाई पड़ती है लेकिन महापुरुष कहते हैं कि इस अवधारणा में सत्य का अंश नहीं है। शक्ति वहीं है जहाँ क्षमा का भाव है। बदले की भावना हिंसा या घृणा उत्पन्न करती है जबकि क्षमा में निहित है अहिंसा का भाव जो धर्म का प्रमुख लक्षण है। जो व्यक्ति अपने क्रोध पर काबू पा लेता है वही शक्तिशाली है। किसी पर उत्पन्न क्रोध को भुला देना वीर पुरुष का ही काम हो सकता है, निर्बल का नहीं। क्षमा करना एक सकारात्मक भाव है। क्षमा न करना और घृणा तथा द्वेष के भावों को पाल लेना विकृत व नकारात्मक मानसिकता का प्रतीक है। शत्रुता और द्वेष-ईर्ष्या आदि शब्दों का अस्तित्व क्षमा के अभाव के कारण ही होता है। क्षमा शत्रुता का नाश करके मित्रता का विस्तार करती है। कहा गया है कि दान के गर्भ में निहित है प्राप्ति का मूल। क्षमादान भी इसका अपवाद नहीं। **हृदय से किया गया क्षमादान मन को शान्ति और सुकून प्रदान करता है। क्या यह उपलब्धि किसी वस्तु की प्राप्ति से कम है?**

क्षमा अर्थात् दूसरे को सुधरने का अवसर देना

यदि कोई व्यक्ति क्षमा माँगता है तो क्षमा न करना भी अपराध जैसी स्थिति को दर्शाता है। क्षमा माँगने पर क्षमायाचक तो अपनी गलती को स्वीकार करके अपराधबोध से मुक्त हो जाता है लेकिन क्षमा न करने वाला उसकी पीड़ा से सुलगता रहता है। अतः किसी के क्षमा माँगने पर क्षमा कर देना स्वयं के लिए भी उपयोगी

क्षण है और दूसरे को सुधरने का अवसर प्रदान करना भी है। क्षमादान का सबसे अधिक सकारात्मक प्रभाव तभी पड़ेगा जब वह सहज भाव से संपन्न होगी। वास्तविक क्षमा आचरण एवं व्यवहार से परिलक्षित होती है। क्षमादान मन की एक दशा है। जो लोग न क्षमा माँगना जानते हैं और न ही क्षमा करना, वे अपने लिए इस धरती पर ही नरक की सृष्टि रच लेते हैं। प्रेम और क्षमा द्वारा किसी पर भी विजय पाई जा सकती है। किसी ने ठीक ही कहा है –

संत न छोड़े सन्ताई,
चाहे कोटि मिले असन्त।
चन्दन विष व्याप्त नहीं,
लिपटे रहत भुजंग।

तो आइये, इस वर्ष प्यारे बापदादा ने हमें बाप समान, संपन्न व संपूर्ण बनने का जो होमवर्क दिया है उसे ब्रह्मा बाप के क्षमाभाव के गुण को अपने में धारण करके पूर्ण करें।

❖

अंदर झांक

ब्र.कु.प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला

दरपन को मत देख तू, अंदर लेकिन झांक।
रंग–रूप तो व्यर्थ हैं, अंतर्मन को आंक।।

कर्मों की खुशबू भली, भला लगे है प्यार
मनवा में गर सच बसे, रोशन तब संसार।।

अपनेपन की धूप से, सुखद–मधुर अहसास।
प्रीति–प्यार औ नेह से, अंजाना भी पास।।

जीवन इक वरदान है, समझ न तू अभिशाप।
फूलों से दामन सजा, महक पायेगा आप।।

हर पल को नव पल बना, सुंदर–सुखद समीर।
जीवन को भरपूर जी, हर औरों की पीर।।

जाता पल ना व्यर्थ हो, हर पल हो इतिहास।
मायूसी को छोड़कर, अपना ले तू आस।।

खुद तक सीमित मनुज जो, सूनापन आभास।
धरती तब उजड़ी लगे, धुंधला–सा आकाश।।

अंधकार मन से मिटा, फैला तू आलोक।
खुद को भी रोशन करे, अरु जगमग कर लोक।।

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 25, 26, 27 सितंबर तथा 23, 24, 25 अक्टूबर 2009
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन *(U. K. Trained)*
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन नं. : (02974) 238347/48/49 **फैक्स** : 238570
ई-मेल : ghrcabu@gmail.com **वेबसाइट** : www.ghrc-abu.com

युवाओं का आह्वान

• ब्रह्माकुमारी सुमन, अलीगंज (लखनऊ)

चन्द्रशेखर आज़ाद के मित्रों ने कई बार उनके बूढ़े माँ-बाप का पता पूछा ताकि वे उन्हें मदद के लिए हर मास कुछ रुपये भेज दें। आज़ाद ने वे रुपये इस आश्वासन के साथ ले लिए कि वह खुद ही भेज देगा पर कुछ दिनों के बाद भी रुपये न भेजने का कारण जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने बड़ी भावना से कहा कि मेरे देश में जितने भी वृद्ध हैं, वे सब मेरे माता-पिता हैं, उन्हें सुखी व स्वतंत्र करना मेरी ज़िम्मेवारी और मेरा फर्ज़ है, वे रुपये उसी कार्य में खर्च हो गये हैं – ऐसी थी क्रांतिकारियों की सेवा भावना। उन्होंने अपने को किसी हद में नहीं बाँधा, सारा देश अपना है। जो भी करना है, सारे देश के हित को ध्यान में रखकर करना है।

जब रामकृष्ण परमहंस जी ने विवेकानन्द का आह्वान किया तो उनके सामने उनकी माँ व उनसे छोटे भाई-बहनें थे जिनके जीवन निर्वाह की ज़िम्मेवारी उन्हीं के ऊपर थी। उन्हें दोनों ही रास्ते अनिवार्य लग रहे थे पर निर्णय एक तरफ का ही हो सकता था। असमंजस में वे तीन दिन तक दुखी रहे फिर बड़ी दृढ़ता के साथ अपनी संकुचित मानसिकता पर विजय प्राप्त कर ली और निकल पड़े विश्व विजयी अभियान पर। उन्होंने सोचा कि मेरे लिए भारत की सेवा के

लिए निकलना ही उचित है और वे निकल पड़े पारिवारिक व मानसिक बंधनों को तोड़ कर।

देखो, भारत माँ की आँखों में झाँक कर

हे राजयोगी युवाओ! क्या तुम्हें अपनी ज़िम्मेवारियों का कोई एहसास नहीं? क्या तुम्हें इस मिट जाने वाली दुनिया से इतना मोह हो गया है जो हाथ पर हाथ रखकर बैठ गये हो? क्या तुम्हें भारत माँ की गुलामी की कोई फिक्र नहीं? क्या सोने की चिड़िया भारत को बदहाल देखकर भी तुम्हें कोई संकल्प नहीं उठता? क्या तुम अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं के पीछे ही घूमते रहोगे या पारिवारिक ज़िम्मेवारियों का बहाना करके अपने आपको ही ठगते रहोगे। अढाई हज़ार वर्षों से माया रावण की गुलामी से जकड़ी भारत माँ की आँखों में झांककर ज़रा देखो, क्या दृश्य सामने है? बीमार, गरीब, विकलांग, लाचार, दुखी, हताश, निराश, ज़िन्दगी से परेशान बेबस लोग, अपनों के सताये हुए लोग, अस्पतालों की बढ़ती भीड़ – क्या इन्हें देखकर आपको कुछ भी नहीं हो रहा? क्या इन्हें ऐसी चिन्तित हालत में छोड़कर आप भाग सकते हो? क्या आपके मज़बूत कंधे इनका बोझ नहीं उठा सकते?

बेबसी पर रहम नहीं आता?

देखो इन नवजवानों को जिनको अपनी ही खबर नहीं कि क्या करने चले थे, क्या करने लगे हैं। कहाँ जाना था, कहाँ जा रहे हैं? क्या करना चाहिये था, क्या कर रहे हैं? माँ-बाप की गाढ़ी कमाई का पैसा नशे में उड़ाकर बर्बाद कर रहे हैं, न सिर्फ पैसा बर्बाद कर रहे हैं पर खत्म कर रहे हैं अपना अनमोल जीवन जो बहुतों की बहुत मेहनत के बाद इस मुकाम तक पहुँच पाया है। क्या तुम्हें इनकी मूर्खता व बेबसी पर रहम नहीं आता? आखिर क्या सोच रहे हो? कहीं ये सब देखकर तुम भी तो दिलशिकस्त नहीं हो रहे हो? नहीं, अभी वो समय नहीं कि आप जैसे लोग भी धराशायी हो जायें।

कहाँ खो गई परख शक्ति

एक तरफ राजनीति दूसरी तरफ

धर्मनीति, अब दोनों ही सिद्धांतहीन हो लक्ष्य के बिना ही चल रहे हैं जिसके कारण बढ़ती महामारी, भ्रष्टाचार, चुनावी दंगल के कारण बढ़ती महंगाई, शासन सत्ता की लालसा की आग अब राष्ट्रव्यापी समस्या हो गई है। नित नई बनती सरकारें, बदलते कानून, क्या इस विकराल समस्या का समाधान आपके सिवाय है किसी के पास? पर आपने कभी इस फैलती आग पर पानी छिड़कने के लिए सोचा? मेरे भाई, क्या ये समस्त मानवता के दुख-दर्द आपको दिखाई नहीं देते या दिखाई देने के बावजूद किसी की करुण दुर्दशा पर आपकी मनोदशा हलचल में नहीं आती? आखिर आपकी फौलादी बाजुओं में जोश कब आयेगा? आपका गर्म खून दिनों-दिन ठंडा क्यों होता जा रहा है? या आप अभी कुछ और देखना चाहते हैं? आपको मानवता की चीत्कार, माया की चुनौती, प्रकृति की चेतावनी दिखाई व सुनाई क्यों नहीं पड़ती? आप जैसे प्रबल पुरुषार्थी, अति आत्मविश्वासी, दृढ़ निश्चयी हिम्मतवानों का रास्ता चट्टानों की तरह रोककर कहीं माया अपने चम्बे में तो नहीं फँसा रही? भाइयो, माया रावण दुश्मन के रूप में नहीं साधु के रूप में आती है, सोने के हिरण के रूप में माया आती है। क्या आपकी परख शक्ति इतनी ढीली हो गई है? भाइयो, अगर आपकी बुद्धि सांसारिक बातों में लगने लगी है या धन के पीछे आकर रुक गई हो तो याद रखो, यह पैसा बहुत कुछ है पर सब कुछ नहीं। अगर भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस, गांधी जी, बालगंगाधर तिलक – ये सब धन के पीछे भागते तो भारत आज इस हालत में होता क्या? पैसा ही सब सुख देता तो राजा भतृहरि, राजा गोपीचन्द, सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध) ने अपना राज्य न छोड़ा होता! मेरे भाइयो, आपका जन्म इतने छोटे उद्देश्य के लिए नहीं हुआ है।

तुम क्यों घबरा जाते हो?

तुम लाखों-करोड़ों मनुष्यों की जीवन नैया पार लगा सकते हो पर तुम कहाँ फँसते जा रहे हो और क्यों उलझकर और उलझते जा रहे हो? तुम्हारी मंज़िल यह नहीं। तुम्हारा लक्ष्य इतना छोटा क्यों? तुम इतनी जल्दी घुटने क्यों टेकने लगते हो? तुम सर्वशक्तिवान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तुम अपार ऊर्जा के धनी हो, तुम्हें तो आगे बहुत विकराल परिस्थितियों का सामना करना है। तुम बहादुर सैनिक हो, भगवान ने तुम पर विश्वास किया है। तुम छोटी-छोटी परिस्थितियों में इतनी जल्दी क्यों घबरा जाते हो? सैनिक तो युद्ध से नहीं घबराता। छोटी-छोटी परीक्षायें भला क्या हैं? तुम्हें तो दूसरों को जीवन दान देने, जीवन बनाने के लिए जीना है; पैसे से जीवन नहीं बनता। ब्रह्मा बाबा, दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी, दादी गुलजार, जगदीश भाई जी जैसे लोग पैसे से नहीं बने, न ही मदर टेरेसा, गांधी, विवेकानन्द, चन्द्रशेखर आजाद पैसे से बनाये जा सकते हैं। मेरे भाइयो, अभी भगवान आपको ऑफर कर रहा है, समय भी आपके इंतज़ार में खड़ा है। लोगों की नज़र आप पर ही है फिर क्यों चुपचाप शांत बैठे हो, उठकर खड़े हो जाओ और तोड़ दो समाज की ज़ंजीरों को, मन के बंधनों को! फेंक दो आलस्य अलबेलेपन की चादर को और ठान लो अपने मन में कि जब तक संसार से दुख-दर्द की छुट्टी न हो जाए तब तक चैन से नहीं बैठेंगे। किसी भी बुराई का अंश किसी भी कोने में जब तक रहेगा जब तक यह युद्ध जारी रहेगा। भ्रष्टाचार व विकारों का जब तक अंत नहीं तब तक पुरुषार्थ जारी रहेगा।

उठा लो अनन्त ऊर्जा के गाण्डीव को

भाइयो, दुनिया को आपमें स्वर्णिम भविष्य नज़र आ रहा है। भगवान ने भी आप पर ही भरोसा किया है इसलिए यह कार्य सिर्फ और सिर्फ तुम्हें ही करना होगा। इसलिए उठो, जागो, अपने आत्मविश्वास को जगाओ। व्यर्थ विचारों व नाउम्मीदी के कारोबार को समाप्त करो। उठा लो अपने अनंत ऊर्जा के गांडीव को, पहन लो समर्थ संकल्पों के कवच को और कूद पड़ो इस महासमर में!

बढ़ाओ हिम्मत का कदम, छोड़ो अपनी अटूट लगन के तीर, आपके मनोबल रूपी गदा का वार खाली नहीं जायेगा। तुम चिन्ता मत करो, सारथी बनकर सर्वशक्तिमान निरंतर तुम्हारा साथ दे रहा है। तुम बस उसकी श्रीमत रूपी शरण में रहो। अरे, कुछ ऐसा करो जो करने योग्य हो, समझने योग्य हो, अंधेरे के भय से सूरज कब तक नहीं निकलता? उसके निकलते ही अंधेरा कैसे भागता है यह आपको नहीं पता क्या? तुम ज़रा उठकर खड़े तो होवो, रास्ता अपने आप बनता चला जायेगा। तुम किंकर्त्तव्यविमूढ़ मत होना, रुकना नहीं, ठहरना नहीं, पीछे की ओर मुड़ना नहीं, दिलशिकस्त हो हारना नहीं, तुम्हें बस विजयी ही बनना है। विजय तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

''नहीं शेर कभी ढूँढ़ा करते,
पदचिन्हों में अपने पथ को,
जाँबाज़ नहीं माँगा करते
कभी किसी की रहमत को।''

जगाओ ज़िन्दादिली को

युवा भाइयो, निकाल फेंको अपनी कमज़ोर मानसिकता को, असफलता की कालिमा को और जगाओ अपने ज़िंदादिली के सूर्य को! माया आपका कुछ नहीं कर सकती, विजय आपसे तब तक दूर नहीं जा सकती जब तक कि आपके इरादों में दम है, विचारों में उमंग है, भावनाओं में भलाई है, दिल में करुणा है, दया है, जीवन में सच्चाई है। ये काम तुम्हारा है, तुम्हें करना ही होगा और तुम ही कर सकते हो। पिछले 2500 वर्षों से बुराइयों की चोट खाते-खाते मानवता लहूलुहान हो चुकी है, इस पर मुक्ति का मरहम लगाना न सिर्फ फर्ज़ बल्कि तुम्हारा अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

अब कोई भी महात्मा, धर्मात्मा व पुण्यात्मा नहीं सुधार सकता, अब तो सिर्फ परमात्मा ही इनका सहारा बन सकता है और बदल सकते हो तुम इनकी जीवन कहानी को, बन सकते हो तुम इनके रहनुमा, दिखा सकते हो मंज़िल! आखिर तुम्हें किसका इंतज़ार है? तुम्हारे सिवा अब इनका कोई मसीहा बनने वाला नहीं। आखिर तुम क्यों सोच रहे हो? और क्या सोच रहे हो? तुम क्यों किसी की प्रतीक्षा कर रहे हो? अरे, और कौन आयेगा जो यह कार्य करेगा? यह कार्य बिना तुम्हारे संभव ही नहीं। इसलिए उठो और बढ़ाओ अपने मजबूत हाथ और थाम लो उन्हें जो निरीह व कातर नज़र से तुम्हारे इंतज़ार में हैं और बुलंद आवाज़ में कह दो इस जहान से कि अब हम जग गये हैं और बता दो उन्हें जो लगभग निष्प्राण हो चुके हैं कि तुम चिन्ता मत करो; अब हममें स्फूर्ति आ गई है! सचेत कर दो माया को कि अब बहुत हो चुका तुम्हारा आतंक; अब तुम्हारी खैर नहीं! अब तुम्हें जाना ही होगा क्योंकि अब हम संभल चुके हैं और याद आ गई हैं हमें हमारी शक्तियाँ और हमारा साथ दे रहा है स्वयं सर्वशक्तिमान परमात्मा; अब तुम्हारे धोखे में कोई आ नहीं सकता क्योंकि अब हमारी तीसरी आँख खोल दी है भगवान ने। तुम्हें क्या, तुम्हारे पूरे वंश को अंश सहित खत्म करके ही हम चैन लेंगे।

ज़रूरी है इन्द्रिय सुख और स्वार्थ का त्याग

जिसने भी समाज के लिए कुछ किया या कोई बड़ी क्रांति लाई तो उसमें उसको अपना इंद्रिय सुख व स्वार्थ छोड़ना पड़ा है, बिना इस त्याग के कुछ भी विशाल कार्य नहीं हो सकता और सामाजिक चेतना क्रांति तब तक संभव नहीं जब तक कि आध्यात्मिक क्रांति का बिगुल नहीं बजायेंगे। छल, दंभ और पाखण्ड समाप्त हो जायेगा जब नैतिकता के बल से उसका सामना करते हैं। इसलिए अपने निजी स्वार्थ व सुखों का त्याग कर तपोबल व मनोबल के द्वारा सुखमय संसार बनाना यही एक मंज़िल, यही एक लगन आपको अग्नि रूप में प्रखर करनी है। मेरे भाइयो, हम सबको आप पर सिर्फ आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है व हम सबको इंतज़ार है कि आप इस पुनीत कार्य का बीड़ा अवश्य उठायेंगे, न सिर्फ आप बीड़ा उठायेंगे बल्कि इस कार्य को अवश्य पूरा करेंगे।

❖

मैं अपने भाग्य पर मुस्कराने लगी

• ब्रह्माकुमारी राज, कोटकपूरा

मेरा जन्म एक गरीब घराने में हुआ। चौदह वर्ष की अल्पायु में ही मेरी शादी अच्छे संस्कारों वाले एक बड़े घर में दूजबर के साथ कर दी गई। मैंने चार लड़कियों और दो लड़कों को जन्म दिया। शादी के चौदह साल बाद मेरे पति की हार्ट अटैक से अचानक मृत्यु हो गई, उस समय मैं 28 वर्ष की थी। इस घटना से बहुत सन्नाटा छा गया, सब खुशियाँ एक सेकंड में खत्म हो गईं। सबसे छोटा लड़का एक वर्ष का था। धीरे-धीरे दु:ख बढ़ने लगे, दुनिया में सब कुछ झूठा लगने लगा, बुरे संकल्प आने लगे कि आत्महत्या कर लूँ पर जब बच्चों को देखती थी तो सोचती थी कि इनको किसके सहारे छोड़ कर जाऊँ। इसी बात से हिम्मत मिल जाती थी। मेरा एक भाई ईश्वरीय ज्ञान में चलता था। मेरी माता जी ने मुझे बताया कि तुम्हारे भाई को तुम्हारी भाभी आश्रम जाने से रोकती है तो अज्ञानतावश मैं भी उसको आश्रम जाने से मना करने लगी।

अज्ञानवश किया विरोध

दिल्ली में हमारे कुछ रिश्तेदार ज्ञान में चलते हैं। उन्होंने मुझे शिवबाबा का गुणों वाला चित्र तथा ध्यान लगाने के लिए छोटी लाइट गिफ़्ट में दी। मैंने उनको घर में पूजा-स्थल पर लगा दिया। मैं 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय नम:' और 'ओम नमो नारायण:' मंत्र का जाप बहुत करती थी तथा गीता, शिव पुराण, भागवत रोज़ पढ़ती थी। तुलसी के पौधे का पूजन, केले का पूजन, सूर्य को जल देना, यह मेरा नित्य नियम था। शिवबाबा की लाइट मिली, उस पर लिखा था, 'सुप्रीम सोल शिव परमात्मा' तो उनको भी याद करना शुरू कर दिया। भजन आदि गाती थी, सुनती थी पर अर्थ नहीं जानती थी, बस इतना पता था कि सच्चे मन से गाने से हमारी पुकार भगवान सुन लेंगे। भगवान की खोज बहुत थी। मन में आता था कि भगवान को निराकार कहते, फिर देवी-देवताओं को साकार में भी पूजते, अवश्य ही परमात्मा कोई और है।

मेरे ज्ञान में चलने से पहले मेरा बड़ा बेटा अपने मामाजी के साथ ईश्वरीय ज्ञान धारण करने लगा था। एक दिन वह घर पर शिव बाबा की बड़ी लाइट और कुछ चित्र ले आया और घर का एक कमरा बाबा का कमरा बना दिया। मुझ अभागिनी का मन अभी अज्ञान से घिरा था। मैंने अपने देवर के लड़कों को कहा कि इसको आश्रम में जाने से रोको। उन्होंने सारे चित्र फाड़ दिये और जब

ब्रह्मा बाबा की तस्वीर फेंकने लगे तो मैंने वो पकड़ ली और बाबा के गीतों की कैसेट भी ले ली। उस समय मुझे लगा कि कोई मुझे रोक रहा है। बच्चे का दिल बहुत दुखी हुआ, वह आश्रम में न जाकर धीरे-धीरे बुरी संगत में पड़ गया, नशे करने लगा और बीमार रहने लगा, तब उसकी आयु मात्र चौदह वर्ष ही थी। उसके बाद मैं भी पश्चाताप करने लगी कि बच्चा तो फूलों के रास्ते पर चला था पर मैंने ही रास्ते में कांटे बिछा दिये। जब यह बेटा नशे में डूबा रहने लगा, तो जिन्होंने हमारा काम संभाला था, वे हमें ऐसी हालत में ले आये कि हमारा सब कुछ लुट गया। उन तथाकथित अपनों ने दीमक की तरह हमें खोखला कर दिया।

ऐसा ज्ञान कहीं नहीं मिला

सन् 1990 में हमारे घर के सामने धर्मशाला में ब्रह्माकुमारी बहनों ने

आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई। मैं दरवाजे पर गई तो एक माता ने मेरे हाथ में एक पर्चा दिया। उस पर लिखा था – आप कौन हैं? परमात्मा कौन हैं? 84 जन्मों की कहानी क्या है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर की मुझे तलाश थी इसलिए मैं प्रदर्शनी देखने चली गई। बहनों ने बहुत प्यार से चित्र समझाये। **ज़्यादा तो समझ नहीं आया परंतु 'चौरासी लाख योनियाँ नहीं, चौरासी जन्म' तथा 'जैसा कर्म वैसा फल' वाले चित्र मन में तीर की तरह लगे और खुशी हुई कि ऐसा ज्ञान तो मुझे किसी भी सत्संग में नहीं मिला।** शाम को जाते समय बड़ी दीदी ने मुझे कहा कि हम पौधा लगाकर जा रहे हैं, तो मैंने कहा, दीदी, पौधा तो लगा दिया अब पानी देते रहना तो यह पौधा फल भी देगा। फिर मैंने आश्रम में जाते रहने की 'हाँ' कर दी। कुछ दिनों के बाद मैं अपनी बड़ी बेटी को लेकर आश्रम पर गई पहली बार। वहाँ प्रभु-प्यार का ऐसा जादू लगा कि धीरे-धीरे ज्ञान-योग की लगन बहुत बढ़ गई। बाबा अमृतवेले खुद उठाने लगे। अलार्म बजने से पहले ही कानों में यह गीत बजता, 'अंधियारे सभी मिट रहे, उजियारा आ गया ...'। वह नशा, अनुभव आज भी शक्ति दे रहा है। बार-बार दिल गाता है – लाख करे दुनिया, तेरा साथ ना छोड़ेंगे ..।

मैं सुधरी तो सब सुधर गये

कहते हैं, जिसका कोई नहीं होता उसका खुदा होता है। मैंने यह अनुभव अच्छी तरह से कर लिया है। पति के शरीर छोड़ने के बाद बच्चों की पढ़ाई, पालना सब काम शिवबाबा के साथ से किये। मैं हैरान होती हूँ कि इतने कठिन कार्य जिन्हें मैं अकेली नहीं कर सकती थी परंतु बाबा की कमाल से अपने आप हो गये। **बाबा ने सभी मुश्किलों से मुझे निकाला। आज मेरा वो बेटा, जो नशे करता था, बाबा की कृपा से ठीक है। मैं सुधरी तो बेटा भी सुधर गया।** सेवाकेंद्र की बहनों का भी बहुत सहयोग मिला। पहले इतना धन-दौलत होते भी मन दुखी रहता था, आज मेरे पास वो सब कुछ नहीं रहा फिर भी भगवान को पाकर मैंने सब कुछ पा लिया है। दिल गाता है, 'कुछ और नहीं चाहिए तुझे पाने के बाद'। मेरी एक बेटी सात वर्षों से और देवर की बेटी दस वर्षों से सेवाकेंद्र पर समर्पित हैं।

पति के शरीर छोड़ने के बाद चूंकि बच्चे छोटे थे, तो माता जी रात को हमारे घर में सोने के लिए आते थे। जब मैं नियमित सेवाकेंद्र पर जाने लगी तो उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि तू अपना सब कुछ ब्रह्माकुमारियों को लुटा देगी, बच्चों का जीवन खराब कर देगी। मैंने उनको कहा कि बाबा को पाकर मैं और ही निर्भय और सुखी हो गई हूँ। फिर भी, मोहवश, वे रोती रहीं। **उस रात उन्हें ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार हुआ। बाबा ने कहा, इस बच्ची की फिक्र अब आप मत करो, यह बच्ची अब मेरी है। सुबह उठकर माता जी कहने लगी, धन्य हो आप और आपका बाबा।** उसके बाद उनका मुझ पर पूरा विश्वास हो गया। इस तरह भगवान ने मुझे काँटों में से चुनकर कौड़ी से हीरे तुल्य बना दिया और जीवन खुशियों से भर दिया। अपने को अभागिनी समझने वाली मैं अपने भाग्य पर मुस्कराने लगी। ❖

प्रेम-रस भीगे रहो

अमृतलाल मदान, कैथल

बाबा की मीठी मुरली है
मीठे बच्चो, जीते रहो।
दुनिया ने जो घाव दिये हैं
क्षमा-सूत से सीते रहो।।
अमृत ही बरसे होंठों से
विष मुस्का कर पीते रहो।
शिव शंकर भी विषपायी थे
नीलकंठ बन जीते रहो।।
भूत का चिन्तन भावी का भय
इन सबसे तुम रीते रहो।
बनकर धारा बहते जाओ
हर पल आते बीते रहो।।
देह नहीं, तुम देहातीत हो
पंक में कमल सरीखे रहो।
जग हो चाहे टेढ़ा-मेढ़ा
तुम किरणों सम सीधे रहो।।
मौसम चाहे रूखा-सूखा
तुम प्रेम-रस भीगे रहो।।

सुखमय परिवार

• ब्रह्माकुमार अवधबिहारी, गोरखपुर

सुखमय परिवार का आधार है आध्यात्मिक ज्ञान। जहाँ इसका अभाव है, वहाँ कलह-क्लेश का प्रभाव है और जहाँ ज्ञान है वहाँ सुखमय संसार है। जैसे शीतकाल में शीतलहरी के प्रकोप से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हो जाता है वैसे ही कलिकाल में माया के प्रकोप से प्रत्येक परिवार प्रभावित हो गया है। टी.वी. पर दिखाई जाने वाली पारिवारिक कहानियों से तो ऐसा लगता है कि दुनिया में कोई भी ऐसा पाप-कर्म नहीं है जिसका होना अब बाकी हो। ऐसे परिवार को सुखमय परिवार नहीं कहेंगे। सुखमय परिवार तो उसे कहा जाता है जहाँ आत्मिक प्रेम और पवित्रता हो, व्यवहार-कुशलता हो, जहाँ सुख-शान्ति से सबको आराम मिल जाता हो। जहाँ वैर-विरोध है, निश्चय ही वह घर नर्क है, वहाँ जीना भी हराम हो जाता है। सुखमय परिवार के कुछ सैद्धान्तिक पहलू, जो परिवार की मर्यादा को बरकरार रखने में मदद करते हैं, निम्नलिखित हैं –

1. वृद्ध का दिल न दुखाना – 'आज का युवा, कल का बूढ़ा' इस प्राकृतिक परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता। मनुष्य अपने बूढ़े बाप से जैसा व्यवहार करता है, बदले में अपने बच्चों से वैसा ही पाता है। देना बीज है, पाना फल है। इसलिए न दुख दो, न दुख लो। बाप की संपत्ति पर यदि पुत्र का अधिकार बनता है तो उस अधिकार के प्रति पुत्र का कुछ कर्त्तव्य भी होता है। आज के युग में, अधिकार का पलड़ा, कर्त्तव्य से भारी हो रहा है। इसी कारण असंतोष और अशान्ति है।

याद रखें, आहत दिल से निकली हुई 'आह' कभी व्यर्थ नहीं जाती, आदमी तो आदमी है, लोहा भी गलकर भस्म हो जाता है। जहाँ सरकार बूढ़ों को 'वरिष्ठ नागरिक' शब्द से सम्मानित कर रही है वहीं अधिकतर परिवारों में, घर वाले उन्हें कटु शब्दों से अपमानित कर रहे हैं। जहाँ सरकार जीवन-यापन हेतु उन्हें दे रही है पेन्शन, वहीं पर घर वाले दे रहे हैं टेन्शन। सोचें और संभलें, जो पिता आपके प्रति अपना दायित्व निभाते-निभाते जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँच गया, उसने यदि आपके अभद्र एवं निकृष्ट व्यवहार से आहत होकर 'बूढ़ा आश्रम' का रास्ता नाप लिया तो आप बद्दुआ और बदनामी से स्वयं को बचा नहीं पायेंगे। इसलिए, अपने स्वार्थपूर्ण रवैये को बदलें और घर की मर्यादा को बनाए रखें।

2. घर में नारी को सम्मान देना – भारतीय नारी को गऊ कहा गया है। चाहे पुण्यात्मा के घर भेज दो, चाहे कसाई के खूंटे से बांध दो, वह बोल नहीं सकती है, चुपचाप चली जाती है। अब समय, परिस्थितियाँ और कानून बदल रहे हैं फिर भी अधिकतर नारियाँ मजबूरीवश बेजुबान ही बनी रहती हैं।

एक तरफ घर में नारी को प्रताड़ित व शोषित करना, दूसरी तरफ परिवार में सुख-शान्ति व अमन-चैन की चाहत रखना वैसा ही है जैसे खट्टे का बीज बोना और मीठे फल की आश रखना। यह अज्ञानता नहीं तो और क्या है जो एक तरफ तो मंदिरों में 'देवी-जागरण' किया जाता है लेकिन घर की देवी को जिन्दा जलाया जाता है। मंदिर की लक्ष्मी को पूजा जाता है और घर की लक्ष्मी को पीटा जाता है। नारी के जड़ चित्र को फूल से सजाता है और घर की लक्ष्मी को सज़ा देता है। विद्या के लिए सरस्वती को, धन के लिए लक्ष्मी को तथा शक्ति के लिए माँ दुर्गा की आराधना करता है और घर में पालनहार माँ को प्रताड़ना देता है। याद रखें, जिस घर में नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ नारी को प्रताड़ित किया जाता है वहाँ से लक्ष्मी रूठ कर पलायन कर जाती है। जिस नारी-शक्ति को खुद भगवान ने आगे किया है उसे नीचे गिराना महापाप है। **भारत की त्यागी, ममतामयी, पवित्र**

महिलाओं की ही महिमा में 'वन्दे मातरम्' तथा 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का गायन व पूजन है। आज कलियुग में भी भारतीय नारी को अपने नाम के आगे 'देवी' शब्द लिखने का अधिकार प्राप्त है। नारी, परिवार की पालनहार माँ है, बच्चों की प्रथम गुरु है इसलिए हर दृष्टिकोण से नारी स्नेह, सम्मान व पूजन के योग्य है। नारी पैर की जूती नहीं बल्कि पुरुष की अर्द्धांगिनी है जो सुख, शान्ति, प्रेम व पवित्रता की अधिकारिणी है। किसी भी परिस्थिति में उसके अधिकार से उसे वंचित न किया जाये।

हे मानव! यह क्यों भूल जाते हो, लक्ष्मी-नारायण भी सतयुग के नर और नारी थे। तुम उसी नारायण के वंशज हो अत: स्वयं को 'नर तू नारायण जानो, नारी को लक्ष्मी मानो'। वे भी प्रवृत्ति वाले थे, तुम भी प्रवृत्ति वाले ही हो। फर्क सिर्फ इतना ही है कि प्रवृत्ति में रहते वे पवित्र थे और तुम काम विकार में फँस अपवित्र बन गये हो। अपने पूर्वजों का अनुसरण करना ही कुल की मर्यादा है। अत: आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग के आधार पर यदि नर और नारी अपनी अन्तर्निहित शक्तियों को जागृत कर लें तो नर श्री नारायण और नारी श्री लक्ष्मी बन सकती है। इस प्रकार एक-दूसरे के सहयोग से परिवार में यदि नारी लक्ष्मी और नर नारायण हो जायें तो फिर कहना ही क्या? तब तो तमोगुणी प्रवृत्ति की निवृत्ति हो जाये और सुखमय परिवार का सपना भी साकार हो जाये।

3. एक-दूसरे की भावना को समझना – आपसी तालमेल बनाये रखने के लिए अहंकारी सोच में परिवर्तन करना पड़ता है। मैं ठीक हूँ, मैं जो कहता हूँ वही ठीक है, सभी को मेरा ही कहना मानना चाहिए, दूसरा गलत है – इस प्रकार की अहंकारपूर्ण भावना को त्याग दें क्योंकि यह दूसरे को दुख देने वाली नकारात्मक प्रवृत्ति है जो परिवार के स्वर्गिक आनन्द को नारकीय दुख में बदल देती है। परिवार एक खेत है जहाँ विचार और भावनाओं का हम बीज बोते हैं, वही बीज फल बनकर सामने आता है। इसलिए हम औरों के लिए क्या सोच रहे हैं, उनके प्रति क्या भाव रख रहे हैं, इस बारे में सदा सावधानी बरतें। प्रयास यही रहे कि हमसे उनकी भावनाएँ आहत न हों। हम उनके प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन तो करें पर उनसे, अपने लिए किसी भी तरह की कोई अपेक्षा न रखें। **अपनी सारी आशाएँ भगवान पर छोड़ दें तो किसी भी व्यक्ति से कोई निराशा नहीं मिलेगी – इस नीति का पालन करने से आपसी तालमेल अच्छा निभेगा।**

4. क्रोध का त्याग करना – जहाँ क्रोध होता है, वहाँ प्यार नहीं होता और जहाँ प्यार होता है वहाँ क्रोध नहीं रहता। क्रोध के भयंकर परिणाम व क्रोध से होने वाले नुकसान से सभी अवगत हैं। ज्ञान तो यही कहता है कि खुद क्रोध न करें और न दूसरे को क्रोध करने का मौका दें। क्रोध अनेक बीमारियों की जड़ है और शान्ति, एक श्रेष्ठ औषधि है। जब कोई क्रोध करे तो आप शांत रहें क्योंकि गर्म लोहे को ठण्डा लोहा ही काटता है, अग्नि को ठण्डे जल से ही बुझाया जाता है। क्रोधी को क्रोधाग्नि में जलता देख खुद को न जलायें बल्कि उसे परवश समझ क्षमा कर दें। क्षमाशीलता मनुष्य का गुप्त सौंदर्य तथा जीवन की सुगंध है। जिसने कभी क्षमा नहीं किया उसने जीवन का आनन्द भी नहीं लिया। क्रोधी का काम है क्रोध करना, आपका काम है शान्त रहना; उसका काम है गाली बकना, आपका काम है सहन करना। **याद रखें, क्षमा करना, झुक जाना, सहन करना, कमजोरी व कायरता नहीं बल्कि महानता है।**

आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग के आधार पर घर-घर को स्वर्ग बनाने की पढ़ाई ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ही होती है जिस पढ़ाई से दैवी गुणों को धारण कर देश में लाखों परिवारों ने अपने घर को स्वर्ग बना लिया है, जहाँ सभी कर्मयोगी बन परिवार संभालते हुए ईश्वर की याद में मस्त और व्यस्त रहते हैं। इच्छुक व्यक्ति ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय शाखा से संपर्क कर सकते हैं।

❖

मेरे शांत रहने से क्या होगा ?

• ब्रह्माकुमार निलेश, रतलाम (म.प्र.)

ज्ञानमार्ग में आने के प्रारंभिक दिनों में प्यारे शिव बाबा के कुछ महावाक्यों को मैं समझ नहीं पाता था। मैं सोचता था कि बाबा हम ब्रह्मावत्सों को व्यक्तिगत रूप में ही क्यों समझाता है? 'आप बच्चों को यह बात करनी है' की बजाय 'बच्चे, तुम्हें यह बात करनी है' ऐसा क्यों कहता है? क्या मैं अकेला विश्वपरिवर्तन कर सकता हूँ? क्या यह मुमकिन है? अगर है तो कैसे? मेरे शांत रहने से दुनिया शांत कैसे होगी? मेरे शक्तिशाली बनने से दुनिया की आत्माएँ माया का सामना करने के लिए शक्तिशाली कैसे बनेंगी? बाबा की याद से मुझ आत्मा के साथ-साथ यह प्रकृति भी सतोप्रधान कैसे बनेगी? इन प्रश्नों का उत्तर मुझे नहीं मिल रहा था। शुरूआती दिनों में योग की यथार्थ विधि पता न होने के कारण स्थूल सेवाओं को ही बाबा की याद समझकर मैं उनमें अत्यधिक व्यस्त रहने लगा लेकिन, अवस्था बिगड़ती जा रही है, खुशी कम हो रही है, नशा उतर रहा है , ऐसा महसूस होने लगा। फिर दादी जी की एक क्लास पढ़ने में आई जिसमें कहा गया था कि **ज्ञान-मार्ग में बाकी सब तो ठीक है पर मुख्य बात है अपनी अवस्था बनाने की। अवस्था बनाने पर ही पूरा अटेंशन दो क्योंकि अंत समय में 'कितनी स्थूल सेवा की, कितना धन यज्ञ में लगाया, कितनों को ज्ञान सुनाया' आदि बातें काम न आकर 'अवस्था कितनी अचल-अडोल बनाई, ज्ञानदाता बनने की बजाय स्वयं ज्ञान का स्वरूप कितने बने, न्यारे और बाबा के प्यारे कितने बने', इसका हिसाब लगाया जायेगा।**

उपरोक्त बातें पढ़ने के बाद चिन्तन चला कि दुनिया को प्रेम, शांति, आनंद, सुख, ज्ञान, शक्ति और पवित्रता देने के लिये इन विषयों पर प्रवचन देने के साथ-साथ मैं स्वयं यदि इन सातों गुणों का स्वरूप बन जाऊँ तो शेष सब मनुष्य इनका स्वरूप आपे ही बनते जाएंगे। ब्राह्मण सो देवी-देवता बनी हुई आत्मायें जब द्वापरयुग में पतित बनने लगीं तब सारी दुनिया में अपवित्रता के प्रकंपन प्रवाहित हुए और इस युग के बाद की आत्माएँ शनैःशनैः पूर्ण रूप से अपवित्रतापूर्ण मार्ग पर बढ़ने लगीं। मुझे बाबा ने महसूस कराया कि मैं विश्व की आधारमूर्त आत्मा हूँ इसलिये जो परिवर्तन मैं विश्व में लाना चाहता हूँ वह परिवर्तन पहले मुझे स्वयं में लाना होगा। मुझमें वह परिवर्तन आता है तो विश्व की समस्त आत्माओं में तथा प्रकृति में भी वह परिवर्तन आपेही आ जायेगा। यह कोई जादू नहीं है बल्कि व्यवहारिक सच्चाई है।

अत्यधिक शीतल जल से भरे किसी धातु निर्मित बर्तन के बाहरी हिस्से को यह आह्वान नहीं करना पड़ता कि हे हवा में फैली हुई पानी की सूक्ष्म बूंदो! आओ और आकर मुझ पर ओस के रूप में इकट्ठी हो जाओ। देखने में आता है कि ज्योंहि बर्तन रखा गया, त्योंहि पानी, ओस के रूप में इकट्ठा होना शुरू हुआ। इसी प्रकार, पानी को गर्म करने वाले हीटर का डंडा भले ही पानी की मात्रा की तुलना में छोटा हो मगर यदि गर्म होने का काम अविरत करता रहे तो एक समय आयेगा कि पूरा पानी उबलने लगेगा।

कहने का भाव यह है कि यदि मैं सर्वशक्तियों से भरपूर हूँ, तीव्र पुरुषार्थ के मार्ग पर अविरत चल रहा हूँ तो मुझे देख इस विश्व को खुद-ब-खुद बदलना ही है। हम ब्राह्मण अभी पूर्ण पवित्र नहीं बने हैं इसलिये विश्व की आत्मायें भी अपवित्रता के वश हैं। हम संपूर्ण बन जायेंगे तो विश्व की सर्व आत्मायें भी अपनी-अपनी संपूर्ण अवस्था को स्वतः प्राप्त करेंगी। अतः हमें यह जान लेना आवश्यक है कि सतयुग की स्थापना के लिये हमारा बदलना अनिवार्य है। क्या और कैसे बदलना है, यह जानने के लिये ही मीठे शिव बाबा की श्रीमत हमें मिल रही है। शिव बाबा श्रेष्ठ मत देने के लिये हैं, जादू-मंत्र से एक सेकंड में सतयुग स्थापन करने के लिये नहीं। ❖

अविनाशी नशा नारायणी नशा

• ब्रह्माकुमार विक्रम, सीतापुर (उ.प्र.)

सच है कि रात के बाद दिन अर्थात् अंधकार के बाद प्रकाश, दु:ख के बाद सुख और नर्क के बाद स्वर्ग अवश्य आता है। जैसे उस रात्रि रूपी अंधकार को मिटाने के लिये सूर्य की रोशनी की आवश्यकता पड़ती है, इसी प्रकार दु:ख, अशान्ति, निराशा, भय, देह अभिमान को मिटाने के लिए पतित पावन, दु:खहर्त्ता, सुखकर्त्ता, प्रेम के सागर, शांति के सागर, आनन्द के सागर ज्ञान सूर्य परमपिता परमात्मा की संसार में आवश्यकता है। परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से नर्कमयी दुनिया को स्वर्ग बना रहे हैं। दुनिया तो बहुत बड़ी है पर इसकी इकाई मानवात्मा है। एक-एक के बदलने से ही संसार बदलता है। ईश्वरीय ज्ञान से अपने दु:खमय जीवन को सुखमय बनते देखने का मैं स्वयं साक्षी हूँ।

भक्ति करते भी सन्तुष्टि नहीं

घर की आर्थिक स्थिति सही होने के कारण और पैसा खूब मिलने के कारण, कुसंगत के प्रभाव से, बचपन में ही कुछ गंदी आदतें जैसे, पान मसाला, तंबाकू, गुटखा आदि खाने की आदत मुझे पड़ गई थी। भक्ति भावना भी मेरे अंदर खूब थी लेकिन हनुमान चालीसा, रामायण, गीता आदि पढ़ते भी मन में पूर्ण संतुष्टि नहीं थी। हमारा वास्तविक परिचय क्या है, भगवान कौन हैं, कैसे हैं, हम कहाँ से आये हैं इत्यादि प्रश्न उठा करते थे। समय बीतता गया। माँ-बाप ने मेरी शादी कर दी। हम दोनों तथा परिवार के सभी सदस्य बड़े प्रेम भाव से रहते थे परन्तु मेरा समय क्षणिक मौज-मस्तियों में नष्ट होने लगा। आलस्य, अलबेलापन तथा नशे की आदत भी बढ़ती गई। जीवन में निकम्मापन-सा आता गया। मेरे माँ-बाप भी मेरा खर्च उठाते-उठाते परेशान होने लगे। मेरा जीवन-स्तर गिरता ही चला गया।

जीवन दुख-अशान्ति से भर गया

उन्हीं दिनों मैंने लौकिक पढ़ाई छोड़ दी तथा केबल का कार्य करने के लिए बस्ती चला गया। यह कार्य कराते हुए दस दिन ही व्यतीत हुए थे कि पत्नी की तबीयत के गंभीर होने का समाचार मिला। मैं तुरंत वापस लौटा। उसकी रिपोर्ट में लिखा था कि उसकी दोनों किडनियाँ फेल हो गई हैं। लखनऊ मेडिकल सेन्टर में उस आत्मा ने हमारे सामने ही शरीर छोड़ दिया। मैं एकदम दंग-सा रह गया कि आखिर वह कौन था जिससे मेरा इतना प्यार था। यह तो मिट्टी है, तो वह कौन था जो इस शरीर को चला रहा था। पत्नी की मृत्यु के बाद मेरा मन अशान्त और दु:खी हो गया जिसके कारण नशा करने की आदत और बढ़ गई। मैं सुबह चार-पाँच बजे से ही खूब गांजा, भांग, शराब आदि सेवन

करने लगता और शाम को बेहोश होकर सो जाता। मेरी ऐसी हालत देख मेरे माँ-बाप और मित्र-संबंधी आदि सब अत्यंत दु:खी थे। मेरा जीवन एकदम नर्कमय बन गया था। उसी समय बीमारी तथा एक मुक़द्दमे के कारण लाखों रुपये का कर्जा भी हो गया था। लौकिक पिता भी चिंतित रहने लगे। जीवन बिल्कुल ही दु:ख-अशांति से भर गया। संबंधी आदि भी मेरा साथ छोड़ने लगे। भगवान पर से भी मेरा विश्वास उठने लगा।

सफेद किरणों का प्रकाश दिखाई दिया

एक दिन मैं बिना नशा किये गाँव से बाहर बाग की तरफ सुबह पाँच बजे घूम रहा था तथा मन ही मन कह रहा था कि हे भगवान, तूने क्या मुझे इसलिए भेजा? आखिर तू मेरी कितनी और परीक्षा लेगा? अब तो मुझे सही मार्ग दिखा या फिर मुझे अपने पास बुला ले। ऐसे ही विचार चल रहे थे कि एकदम सफेद किरणों

का प्रकाश-सा दिखाई दिया और ऐसा लगा कि मुझसे कोई कह रहा है, **मीठे बच्चे, अब तुम्हारे दु:ख के दिन दूर हुए। ऐसा भी लगा कि कहने वाला मुझे अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। मुझे बिल्कुल हल्कापन महसूस हुआ जैसे कि मैं वहाँ नहीं हूँ।** बाग से घर आकर, बिना कोई नशा किये अपने मित्रों से मिलने चला, रास्ते में एक श्वेत वस्त्रधारी भाई से मुलाकात हुई जो कि मेरे मित्र के मामा हैं। वे अपने घर के दरवाजे पर खड़े थे। मुझे प्यार भरी दृष्टि से देखते हुए बोले, मैं जानता हूँ विक्रम, तुम्हारे साथ जो हुआ वह दु:खद है परंतु भाई, यह संसार ही सुख-दु:ख, हार-जीत, जन्म-मरण का अद्भुत बना-बनाया खेल है। इसमें सबका अपना-अपना एक निश्चित समय का पार्ट है। इस अनादि ड्रामा में भाँति-भाँति के एक्टर हैं जो अपने शरीर रूपी वस्त्र बदलते रहते हैं। इस अनादि-अविनाशी ड्रामा के मुख्य डायरेक्टर दु:खहर्त्ता, सुखकर्त्ता, अकालमूर्त, जानी-जाननहार, सत्यम् शिवम् सुंदरम् परमपिता परमात्मा हैं जो इस सृष्टि पर अभी आये हुए हैं तथा इस नर्कमयी दुनिया को ब्रह्माकुमारियों के माध्यम से स्वर्ग बना रहे हैं। आप भी सत्यता को जानें तथा परमात्मा पिता द्वारा दिये जा रहे सुख, शान्ति, आनन्द, पवित्रता, ज्ञान, दिव्य गुण ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त करें। आप मेरे साथ गीता पाठशाला चलें, साप्ताहिक कोर्स कर लें। मैं उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनता रहा। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई मुझे अपनी तरफ खींच रहा है।

उलझे प्रश्न सुलझ गये

मैं गीता पाठशाला चलने को तैयार हो गया। वहाँ मुझे शांति की अनुभूति हुई। ब्रह्माकुमारी बहन ने पहला पाठ पढ़ाते हुए कहा, आप इस शरीर रूपी गाड़ी को चलाने वाली एक चैतन्य, दिव्य प्रकाश स्वरूप आत्मा हो। यही आपका अविनाशी वास्तविक परिचय है। जैसे उस गाड़ी को व्यक्ति ड्राइव करता है, उसी प्रकार शरीर रूपी गाड़ी को आत्मा कर्मेन्द्रियों द्वारा ड्राइव करती है। इस तरह, सात दिनों में मुझे परमात्मा का परिचय, तीन लोक, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान दिया गया। बचपन से लेकर अभी तक के तमाम अनसुलझे प्रश्न हल हो गये। मैं प्रतिदिन क्लास में आने लगा तथा प्रभु की वाणी (मुरली) सुनने एवं प्राण आधार पिता परमात्मा को याद करने लगा। इससे मैं खुशी से एकदम झूमने लगा। बाबा ने मुझे कई अनुभव भी कराये जैसे कि, मैं स्वयं को प्रकाश रूप अनुभव कर रहा हूँ तथा अन्य को देखा तो लगा कि भ्रकुटि के बीच एक बिंदु रूप प्रकाश इस शरीर को चला रहा है। मुझे असीमित शक्तियों का अनुभव होने लगा। नशा करने की मेरी आदत कोसों दूर चली गई। मुझे बदला हुआ देख मेरे मित्र-संबंधी आश्चर्यचकित हो सोचने लगे कि इतना नशा करने वाला एकदम सारा नशा छोड़ दे तो पागल हो जाये। यह सत्य भी है परंतु मुझे तो परमपिता की याद का रूहानी-अविनाशी नशा चढ़ने लगा था। कुछ महीने बाद संपूर्ण ग्राम विकास अभियान की रैली में गाँवों में जाकर सेवा की, बहुत खुशी मिली। इस सेवा के फलस्वरूप एक सर्टिफिकेट भी मिला। उसे लेते समय मेरी आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित हो उठी कि कुछ समय पूर्व जिसे लोगों ने यह कहा कि यह धरती का बोझ है, नशेबाज है, आज स्वयं परमात्मा ने उसे सम्मान-पत्र भेजा है।

जनवरी, 2008 में बापदादा से मिलने का पद्मापद्म भाग्यशाली अवसर प्राप्त हुआ। मधुबन पहुँचते ही ऐसा लगा कि मैं यहाँ अनेक बार आया हूँ। बिछड़े दैवी परिवार से मिलके खुशियों का ठिकाना न रहा। जब मैं वापस घर (सीतापुर) गया तो एक मिल में नौकरी और अच्छा वेतन मिलने लगा। सरकार की एक योजना के तहत मेरा लाखों रुपयों का कर्ज भी माफ हो गया। मेरे परिवार के सभी सदस्य बहुत प्रसन्न हुए। **मैं अपने आप को बहुत भाग्यवान समझता हूँ कि जिस भगवान को पाने के लिए लोग दर-दर भटकते हैं उस पिता परमात्मा ने मुझे कीचड़ से निकाल कमल समान बनाया। बापदादा को मैं किन शब्दों में धन्यवाद करूँ, मेरे पास शब्द ही नहीं हैं।** ❖

नवरात्रि का त्योहार .. पृष्ठ 1 का शेष

आदिशक्ति ने रक्त बिन्दु का इस तरह विनाश किया कि उसका एक भी बिन्दु अथवा बीज नहीं रहा।

शब्दार्थ या भावार्थ

वास्तव में तो इन आख्यानों में रूपक अलंकार के द्वारा विश्व के एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त का वर्णन किया गया है। वास्तव में किसी एक या किन्हीं दो असुरों द्वारा सभी देवी-देवताओं के परास्त होने की बात शब्दार्थ में तो किसी के गले के नीचे उतरना भी मुश्किल है। हाँ, भावार्थ में यह वृत्तांत बहुत महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में 'मधु' और 'कैटभ', 'मीठे' और 'विकराल' अर्थ के वाचक होने से 'राग' और 'द्वेष' के प्रतीक हैं और 'असुर' शब्द 'आसुरी लक्षणों' या 'मनोविकारों' का बोधक है। काम, मोह और लोभ – 'मधु' नामक असुर हैं और क्रोध तथा अहंकार, 'कैटभ' हैं। इसी प्रकार 'महिष' शब्द का अर्थ 'भैंस' है। भैंस 'मंद बुद्धि' तथा 'तमोगुण' का प्रतीक है। तभी तो एक प्रश्नोक्ति भी है – 'अक्ल बड़ी कि भैंस?' 'धूम्रलोचन' का अर्थ है, धुएँ वाली आँखें। अत: यह ईर्ष्या और बुरी दृष्टि का वाचक है। शुम्भ और निशुम्भ हिंसा और द्वेष आदि के वाचक हैं।

वास्तविक भाव

अत: तीनों आख्यानों का वास्तविक भाव यह है कि पिछली चतुर्युगी के अंत में जब विनाश काल निकट था और सृष्टि पर अज्ञान तथा तमोगुण रूपी रात्रि छाई हुई थी तब राग (मधु) और द्वेष (कैटभ) तथा हिंसा (शुम्भ और निशुम्भ) ने उन सभी नर-नारियों को जो कि सतयुग में दिव्यता संपन्न होने से देवी-देवता थे परंतु धीरे-धीरे अपवित्रता की ओर अग्रसर होते आये थे, अपना बंदी बना रखा था। यहाँ तक कि सतयुग के आरंभ में जो देव-शिरोमणि 'श्री नारायण' थे, अब वे भी जन्म-जन्मान्तर के बाद मोह-निद्रा में विलीन थे। **ऐसी धर्म-ग्लानि के समय परमपिता शिव ने त्रिदेव के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञान, योग तथा दिव्य गुण रूपी शक्ति से सुसज्जित किया। यह ज्ञान ही उनका तीसरा नेत्र था और अन्तर्मुखता, सहनशीलता आदि दिव्य शक्तियाँ ही उनकी अष्ट भुजायें थीं। इन्हीं शक्तियों के कारण वे 'आदि शक्ति' अथवा 'शिव शक्ति' कहलाईं। इन आदि कुमारियों अथवा शक्तियों ने भारत के नर-नारियों को जो कि सतयुग में देवी-देवता थे, जगाया और उन्हें उत्साहित करके आसुरी प्रवृत्तियों का नाश किया – ऐसा कि उनका बीज, अंश या बिन्दु भी नहीं रहने दिया कि जिससे संसार में फिर आसुरियता पनप सके। उन द्वारा ज्ञान दिये जाने की यादगार के रूप में आज नवरात्रियों के प्रारंभ में 'कलश' की स्थापना की जाती है। उन द्वारा जगाये जाने की स्मृति में आज भक्तजन जागरण करते हैं तथा योग द्वारा आत्मिक प्रकाश किये जाने के कारण ही वे अखण्ड दीप जगाते हैं।** उन कन्याओं के महान कर्त्तव्य के कारण ही हर वर्ष इन दिनों कन्या-पूजन करते हैं और सरस्वती, दुर्गा आदि से प्रार्थना करते हैं कि 'हे अम्बे, हे माँ, मेरी ज्योति जगा दो और मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो कि मेरे अन्तर का अंधकार मिट जाये।'

आत्मा का दीपक जगाओ

अब पुन: कलियुग के अंत का समय चल रहा है, आसुरीयता तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला है। अब परमपिता शिव पुन: कन्याओं को ज्ञान शक्ति देकर जन-जन की आत्मिक ज्योति जगा रहे हैं और आसुरीयता के अन्त का कार्य करा रहे हैं। इसलिए हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम केवल जयघोष या कर्म-काण्ड में ही न लगे रहें बल्कि अपने मन में बैठे महिषासुर, मधु-कैटभ, रक्तबिन्दु या धूम्रलोचन का नाश कर दें। वास्तव में ज्ञान द्वारा आत्म-ज्योति जगाना ही सच्चा दीप जगाकर सही रूप में नवरात्रि मनाना है। यही नारायण द्वारा मोह-निद्रा को छोड़ना तथा मधु-कैटभ को मारना या (आध्यात्मिक) शक्ति द्वारा महिषासुर किंवा धूम्रलोचन और रक्तबीज आदि का संहार करना है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org